वर्ष- 10, अंक- 05, पृष्ठ- 8, मूल्य : 02 रुपये

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज , सोमवार,04 फरवरी, 2024

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Download From

Adhunik Samachar

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री चुने गए शहबाज शरीफ दूसरी बार संभालेंगे सत्ता की कमान

इस्लामबाद। पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री के रूप में शहबाज शरीफ को चुना गया हैं। विपक्ष के हंगामे के बीच नवनिर्वाचित संसद में बहुमत हासिल करने के बाद शहबाज शरीफ को गठबंधन सरकार का नेतृत्व करने के लिए दूसरी बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने। शहबाज शरीफ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) की ओर से सर्वसम्मति से उम्मीदवार चुने गए हैं। उन्हें 336 सदस्यीय सदन में 201 वोट हासिल हुए हैं। पीएमएल-एन अध्यक्ष शहबाज (72) पाकिस्तान के तीन बार के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ (74) के छोटे भाई हैं। शहबाज शरीफ पाकिस्तान में नए प्रधानमंत्री के रूप में चुने गए हैं। शहबाज शरीफ पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज) के नेता हैं। पाक मीडिया की रिपोर्ट ने इसकी जानकारी दी है। पीएमएल-एन अध्यक्ष शहबाज (72) पाकिस्तान के तीन बार के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के छोटे भाई हैं। शहबाज शरीफ को दूसरी बार गठबंधन सरकार का नेतृत्व करने के लिए प्रधानमंत्री चुना गया है। नेशनल असेंबली के स्पीकर सरदार अयाज सादिक ने नतीजों की घोषणा करते हुए शहबाज को पाकिस्तान का 24वां प्रधानमंत्री नियुक्त किया। शहबाज को सोमवार को राष्ट्रपति भवन ऐवान-ए-सद्र में पद की शपथ दिलाई जाएगी। पीटीआई समर्थित सांसदों के हंगामे और नारेबाजी के बीच नई संसद का सत्र बुलाया गया। पीपीपी के अलावा, शहबाज को मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट (एमक्यूएम-पी), पाकिस्तान मुस्लिम लीग (क्यू), बलूचिस्तान अवामी पार्टी, पाकिस्तान मुस्लिम लीग (जेड), इस्तेहकाम-ए-पाकिस्तान पार्टी और नेशनल पार्टी का समर्थन प्राप्त था। बता दें कि पाकिस्तानी संसद में रविवार को पीएम के चुनाव के लिए वोटिंग शुरू हुई।

10 दिनों में 12 राज्यों का दौरा और 29 कार्यक्रम,बीजेपी की सूची जारी होने के बाद मिशन मोड में पीएम मोदा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने तैयारियां शुरू कर दी है। पार्टी ने शनिवार को अपने 195 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर आधिकारिक तौर पर लोकसभा चुनाव-2024 के लिए कमर कस ली है। पीएम मोदी भी आगामी चुनाव को लेकर अब मिशन मोड में जनता के बीच उतरने की तैयारी में हैं पीएम मोदी अगले 10 दिनों में 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का दौरा करेंगे। इस दौरान वह देश के अलग-अलग हिस्सों में कुल 29 कार्यक्रमों में भी हिस्सा लेंगे। प्रधानमंत्री तेलंगाना तमिलनाडु ओडिशा पश्चिम बंगाल बिहार जम्मू और कश्मीर असम अरुणाचल प्रदेश उत्तर प्रदेश गुजरात राजस्थान और दिल्ली सहित कई अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का दौरा करेंगे। पीएम मोदी अगले 10 दिनों में 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का दौरा करेंगे। इस दौरान वह देश के अलग-अलग हिस्सों में कुल 29 कार्यक्रमों में भी हिस्सा लेंगे। प्रधानमंत्री तेलंगाना, तमिलनाडु, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बिहार, जम्मू और कश्मीर, असम, अरुणाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और दिल्ली सहित कई अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का दौरा करेंगे पीएम मोदी अपनी यात्रा की शुरुआत चार मार्च को तेलंगाना के आदिलाबाद से करेंगे। इस दौरान वह 56 हजार करोड रुपये से अधिक की कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। प्रधानमंत्री इस दौरान आदिलाबाद में एक सार्वजनिक रैली को भी संबोधित करेंगे पीएम मोदी चार मार्च को ही तमिलनाडु की भी यात्रा करेंगे, जहां वह कलपक्कम में परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक सरकारी कंपनी-भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड (भाविनी) का दौरा करेंगे। चेनन्ई की अपनी यात्रा के दौरान पीएम मोदी एक सार्वजनिक रैली को भी संबोधित करेंगे। इसके बाद वह हैदराबाद जाएंगे।पीएम मोदी पांच मार्च को तेलंगाना के संगारेड्डी का दौरा करेंगे। इस दरौन वह कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। प्रधानमंत्री संगारेड्डी में एक सार्वजनिक बैठक को भी संबोधित करेंगे। तेलंगाना के बाद प्रधानमंत्री ओडिशा जाएंगे, जहां वह चंडीखोल, जाजपुर में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण एवं शिलान्यास करेंगे। इसके बाद वह चांदीखोल में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करेंगे। ओडिशा के बाद वह सीधे पश्चिम बंगाल जाएंगे प्रधानमंत्री मोदी छह मार्च को पश्चिम बंगाल के कोलकाता रहेंगे। इस दौरान वह कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। पीएम मोदी उत्तर 24 परगना जिले के बारासात में एक जनसभा को संबोधित करें गे। इस सभी कार्यक्रमों में शामिल होने के बाद पीएम मोदी बिहार के बेतिया में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास करने के लिए बिहार जाएंगे पीएम मोदी सात मार्च को श्रीनगर में कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखने के लिए जम्मू-कश्मीर की यात्रा करेंगे। 8 मार्च को प्रधानमंत्री असम की यात्रा से पहले पीएम मोदी दिल्ली में राष्ट्रीय रचनाकार पुरस्कार के वितरण समारोह में भाग लेंगे प्रधानमंत्री 9 मार्च को अरुणाचल प्रदेश की यात्रा करेंगे। इस दौरान वह पश्चिम कामेंग में सेला सुरंग का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद पीएम मोदी ईटानगर में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे। अरुणाचल प्रदेश से प्रधानमंत्री असम जाएंगे, जहां वह असम के जोरहाट में लाचित बरफुकन की प्रतिमा का अनावरण करेंगे। पीएम मोदी जोरहाट में कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे।

बीजेपी से टिकट मिलने के बाद हेमा मालिनी ने जताया जीत का भरोसा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मुंबई। फिल्म अभिनेत्री से राजनीतिज्ञ बनीं हेमा मालिनी को तीसरी बार लोकसभा पहुंचाने के लिए बीजेपी ने अपना उम्मीदवार बनाया है। मथुरा से बीजेपी सांसद हेमा मालिनी ने पार्टी से टिकट मिलने पर रविवार को कहा कि मैं यहां पर पहले के मुकाबले और काम करूंगी... मुझ पर फिर से विश्वास करने के लिए मैं प्रधानमंत्री, गृह मंत्री अमित शाह, जेपी नड्डा और योगी आदित्यनाथ को धन्यवाद देती हूं।फिल्म अभिनेत्री से राजनीतिज्ञ बनीं हेमा मालिनी को तीसरी बार लोकसभा पहुंचाने के लिए बीजेपी ने अपना उम्मीदवार बनाया है। मथुरा से बीजेपी सांसद हेमा मालिनी ने पार्टी से टिकट मिलने पर रविवार को कहा कि मैं यहां पर पहले के मुकाबले और काम करूंगी... मुझ पर फिर से विश्वास करने के लिए मैं प्रधानमंत्री गृह मंत्री अमित शाह जेपी नड्डा और योगी आदित्यनाथ को धन्यवाद देती हूं। इस बार खुद हेमा मालिनी मथुरा से फिर चुनाव लड़ने को इच्छुक थीं। बीते वर्ष अक्टूबर में हेमा मालिनी की उम्र 75 हो गई थी, ऐसे में उन्हें इस बार टिकट मिलने में संशय था। इसे लेकर कई दावेदार तैयार थे। लेकिन बीते वर्ष नवंबर में सांसद हेमा द्वारा कृष्ण भक्त मीराबाई की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी यहां पहुंचे। डेढ़ घंटे तक हेमा मालिनी का नृत्य देखा। बस तभी से उनकी नेतृत्व में मजबूत पकड़ का अंदाजा राजनीतिक लोगों को हो गया था। उनकी टिकट इस बार भी करीब-करीब पक्की मानी जा रही थी। सांसद ने खुद तीसरी बार भी चुनाव लड़ने की इच्छा जताई थी। उन्होंने यह भी कहा था कि मथुरा से टिकट नहीं मिली, तो वह कहीं और से चुनाव नहीं लड़ेंगी। तीन बार सांसद रहे चौधरी तेजवीर सिंह को राज्यसभा सदस्य बनाने से जाट समाज से दावेदारी कमजोर हो गई थी, लेकिन सांसद हेमा मालिनी के पति धर्मेंद्र जाट समाज से हैं, तो खुद ब्राह्मण और महिला हैं। ऐसे में अन्य के मुकाबले उनकी दावेदारी सबसे मजबूत रही।

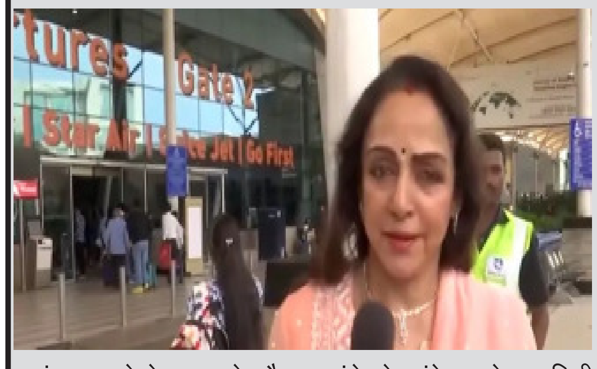

आपसी दुश्मनी समेत हर एंगल से हो रही जांच', रामेश्वरम कैफे ब्लास्ट पर गृह मंत्री का बयान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

बेंगलुरु। बेंगलुरु के रामेश्वरम कैफे में हुए विस्फोट की हर एक एंगल से जांच की जा रही है। कर्नाटक के गृह मंत्री डॉ. जी परमेश्वर ने रविवार को कहा कि पुलिस व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता, चुनाव और राज्य में स्थिर सरकार के मद्देनजर बेंगलुरु आने वाले निवेशकों को आतंकित करना कुछ ऐसे पहलू हैं, जिन पर जांच की जा रही है। बेंगलुरु के रामेश्वरम कैफे में हुए ब्लास्ट की जांच तेजी से की जा रही है। इसी बीच गृह मंत्री जी परमेश्वर ने कहा कि स्थिर सरकार को देखते हुए कई निवेशक यहां आ रहे हैं ऐसा या तो निवेशकों को बेंगलुरु आने से रोकने के लिए या किसी अन्य अज्ञात कारणों से किया गया होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कारोबारी प्रतिद्वंद्वियों ने ईर्ष्या के कारण ऐसा किया होगा। यह विस्फोट शुक्रवार को पूर्वी बेंगलुरु के ब्रूकफील्ड में रामेश्वरम कैफे में हुआ। टोपी, मास्क और चश्मा पहने एक व्यक्ति इस मामले में मुख्य संदिग्ध है और अभी भी उसका पता नहीं चल पाया है। गृह मंत्री ने कहा कि मामले को सुलझाने के लिए आठ टीमें काम कर रही हैं और उनके साथ राष्ट्रीय जांच एजेंसी, राष्ट्रीय सुरक्षा समूह (एनएसजी) और इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) भी टीमें भी जांच में लगी हुई हैं। परमेश्वर ने कहा, ठस्थिर सरकार को देखते हुए कई निवेशक यहां आ रहे है, ऐसा या तो निवेशकों को बेंगलुरु आने से रोकने के लिए या किसी अन्य अज्ञात कारणों से किया गया होगा।ठ मंत्री ने कहा कि कारोबारी प्रतिद्वंद्वियों ने ईर्ष्या के कारण ऐसा किया होगा। यह भी एक पहलू है, जिस पर चर्चा हो रही है। गृह मंत्री ने कहा कि रामेश्वरम कैफे में 11 इकाइयां हैं और मालिक अपनी 12वीं इकाई स्थापित करने की योजना बना रहे थे, जिसके लिए एडवांस पेमेंट भी की जा चुकी है। उन्होंने कहा, ठहम इस मामले को सुलझा लेंगे, हम इसे नहीं छोड़ेंगे। यह मामला कितना भी मुश्किल क्यों न हो, हमारा विभाग इसका भंडाफोड़ करेगा।ठमंत्री ने लोगों से अपील की कि वे केवल उनके, पुलिस और मुख्यमंत्री सिद्धारमैया द्वारा जारी बयानों पर भरोसा करें और किसी प्रकार की अटकलों पर ध्यान न दें। 19 नवंबर, 2022 को मंगलुरु में प्रेशर कुकर विस्फोट से संबंधित एक प्रशन्न पर, परमेश्वर ने कहा कि विस्फोटकों और अन्य उपकरणों का जमावड़ा वैसा ही था जैसा मंगलुरु की घटना में था, लेकिन तुलना का मतलब यह नहीं है ।

भारत को घोर गरीबी के उन्मूलन में मिली कामयाबी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। थिंक टैंक नीति आयोग ने पिछले महीने एक रिपोर्ट में कहा था कि सरकार के कल्याणकारी कार्यक्रमों से बीते नौ वर्षों में करीब 25 करोड़ लोगों को बहुआयामी गरीबी से बाहर निकालने में मदद मिली है। अब अमेरिका के थिंक टैंक द ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन के अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रीय नमूना सर्वे कार्यालय (एनएसएसओ) के हालिया खर्च खपत डाटा के आधार पर तैयार अध्ययन रिपोर्ट में कहा है कि भारत को घोर गरीबी का उन्मूलन करने में सफलता मिल गई है। अध्ययन में कहा गया है कि कुल आबादी में गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वालों (प्रतिदिन 1.90 डालर से कम खर्च करने वाले) की संख्या 2011-12 की 12.2 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में दो प्रतिशत आ गई। यह गरीबों की संख्या में हर वर्ष 0.93 प्रतिशत की कमी के बराबर है।

वायनाड के सरकारी पशु चिकित्सा कॉलेज में हुई छात्र की मौत, कांग्रेस ने सीबीआई जांच की मांग की

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

तिरुवनंतपुरम। कांग्रेस नेता वी डी सतीसन ने रविवार को वायनाड में केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में एक छात्र की हाल ही में हुई मौत की सीबीआई जांच की मांग की। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि 18 फरवरी को 20 वर्षीय सिद्धार्थन जेएस की मौत के कारण हुए क्रूर हमले का विवरण विश्वविद्यालय से सामने आ रहा है। कांग्रेस नेता वी डी सतीसन ने रविवार को वायनाड में केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में एक छात्र की हाल ही में हुई मौत की सीबीआई जांच की मांग की। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि 18 फरवरी को 20 वर्षीय सिद्धार्थन जेएस की मौत के कारण हुए क्रूर हमले का विवरण विश्वविद्यालय से सामने आ रहा है। सतीसन ने कहा, ठउनके माता-पिता आरोप लगा रहे हैं कि एसएफआई नेताओं के नेतृत्व में एक भीड़ ने उन्हें बिना खाना या पानी दिए कई दिनों तक सार्वजनिक सुनवाई की और फांसी देने से पहले उन पर बेरहमी से हमला किया। यह एक गंभीर मामला है कि शिक्षक भी इस क्रूरता का हिस्सा थे। विधानसभा में विपक्ष के नेता ने यह भी आरोप लगाया कि जिले के वरिष्ठ सीपीआई (एम) नेताओं ने जांच अधिकारियों को धमकी दी थी। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि पुलिस जांच में गंभीर खामियां थीं और उन्होंने (पुलिस ने) मामले में आरोपियों को बचाने का भी प्रयास किया। सतीसन ने कहा, ठहम पुलिस से निष्पक्ष जांच की उम्मीद नहीं कर सकते। केरल में ऐसी घटना दोबारा नहीं होनी चाहिए। परिवार सीबीआई जांच की मांग कर रहा है। राज्य सरकार को घटना के पीछे के सभी कारकों पर विचार करना चाहिए और तथ्यों और साजिश को सामने लाने के लिए मामले को सीबीआई को सौंप देना चाहिए।पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन सनतक के द्वितीय वर्ष के सिद्धार्थन (20) की मौत के मामले में अब तक कुल 18 छात्रों को गिरफ्तार किया गया है, और पुलिस ने आज उनमें से 15 को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। सिद्धार्थन का शव 18 फरवरी को छात्रावास के सननघर में लटका हुआ मिला था। सिद्धार्थन के माता-पिता ने दावा किया है कि उसके कॉलेज के कुछ साथियों ने उन्हें बताया कि कुछ स्थानीय एसएफआई नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उसे पीट-पीटकर मार डाला। पिता ने दलील दी कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के मुताबिक, उनके बेटे के शरीर पर चोटों के निशान और खाली पेट था, जिससे पता चलता है कि उसे बेरहमी से पीटा गया था।

एमपी में राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा में 'न्याय' का बताया मतलब, बेरोजगारी से लेकर इन मुद्दों पर भाजपा को घेरा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

ग्वालियर। आगामी लोकसभा चुनावों से पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा शनिवार दोपहर को मुरैना जिले में मध्य प्रदेश में प्रवेश किया। यह राज्य के शिवपुरी, गुना, राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, धार और रतलाम जिलों से होकर गुजरेगा। यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को न्याय के महत्व पर जोर दिया और देश में व्याप्त अन्याय के लिए नफरत बढ़ने को जिम्मेदार ठहराया आगामी लोकसभा चुनावों से पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा शनिवार दोपहर को मुरैना जिले में मध्य प्रदेश में प्रवेश किया। मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित मोहना में एक सभा को संबोधित करते हुएराहुल गांधी ने आर्थिक असमानता सामाजिक असमानता और किसानों और युवाओं के साथ दुर्व्यवहार को प्रमुख चिंताओं के रूप में चिह्नित किया। बीजेपी ऐसे सभी आरोपों से इनकार करती रही है मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित मोहना में एक सभा को संबोधित करते हुए, राहुल गांधी ने आर्थिक असमानता, सामाजिक असमानता और किसानों और युवाओं के साथ दुर्व्यवहार को प्रमुख चिंताओं के रूप में चिह्नित किया। बीजेपी ऐसे सभी आरोपों से इनकार करती रही है अपनी 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के लिए थोड़े समय के लिए रुके गांधी ने जीएसटी और नोटबंदी जैसी नीतियों के प्रतिकूल प्रभावों की आलोचना की और उन्होंने दावा किया कि देश में बेरोजगारी 40 साल में सबसे ज्यादा हैं। गांधी ने कहा कि जीएसटी और नोटबंदी ने अत्यधिक बेरोजगारी को बढ़ावा दिया है। अब बेरोजगारी दर पिछले 40 वर्षों में सबसे अधिक है।' कांग्रेस नेता ने आगे दावा किया कि भारत की युवा बेरोजगारी दर पाकिस्तान जैसे देशों से भी अधिक है, उन्होंने इसके लिए सरकार की नीतियों का प्रभाव बताया, जिसने छोटे व्यवसायों पर भारी असर डाला है। गांधी ने कहा कि अपनी यात्रा के दूसरे चरण की शुरुआत करते समय उन्होंने न्याय शब्द को शामिल किया था क्योंकि आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में और किसानों और युवाओं के खिलाफ अन्याय के कारण देश में नफरत फैल रही है। गांधी ने सैनिकों, विशेष रूप से अगिन्पथ योजना में नामांकित लोगों के लिए कम होती मान्यता और लाभों पर दुख व्यक्त किया। गांधी ने कहा किउन्हें आवश्यक सहायता से वंचित किया जा रहा है। अब, अगिन्वीरों को देश के लिए अपनी जान गंवाने पर शहीद का दर्जा नहीं मिलेगा। उन्होंने दावा किया कि उन्हें पेंशन और कैंटीन की सुविधा भी नहीं मिलेगी। कांग्रेस नेता ने अन्य पिछड़ा वर्ग, आदिवासियों और दलितों सहित 73 प्रतिशत आबादी की हाशिए पर स्थिति पर भी प्रकाश डाला और कहा कि उन्हें शासन और व्यापार के अवसरों से बाहर रखा गया है। उन्होंने केंद्र सरकार पर किसानों के बजाय उद्योगपतियों के प्रति पक्षपात का आरोप लगाते हुए चुनिंदा उद्योगपतियों के बड़े पैमाने पर ऋण माफ करने की आलोचना की।

नियुक्ति दिलाएं।
6000 शिक्षक भर्ती आरक्षण घोटाला

जरूरत पड़ी तो केस एनआईए को सौंपने पर करेंगे विचार' सीएम सिद्दरमैया रामेश्वरम कैफे ब्लास्ट मामले पर बोले

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

चिक्कमगलुरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया ने रविवार को कहा कि जरूरत पड़ने पर सरकार रामेश्वरम कैफे विस्फोट मामले को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को सौंपने पर विचार कर सकती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्रीय अपराध शाखा (सीसीबी) मामले की जांच कर रही है 1 मार्च यानि बीते शुक्रवार को पूर्वी बेंगलुरु के ब्रूकफील्ड में रामेश्वरम कैफे में ब्लास्ट हुआ। इस हादसे में लगभग 10 लोग घायल हुए हैं। पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर इस मामले की जांच कर रही है। वहीं कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया ने कहा कि अगर इस केस में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की जरूरत पड़ती है तो उसपर भी विचार किया जाएगा। बीजेपी की एनआईए जांच की मांग पर सिद्दरमैया ने कहा, ''हम देखेंगे। अभी तो जांच शुरू हुई है। अभी तक किसी भी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई है। अगर जरूरत पड़ी तो हम देखेंगे (एनआईए जांच के लिए)। बीजेपी के इस आरोप पर कि शहर ब्रांड बेंगलुरु के बजाय ठबम बेंगलुरुठ बन गया है, सिद्दरमैया ने जवाब दिया, ठजब बीजेपी के कार्यकाल के दौरान चार बम विस्फोट हुए तो हमें इसे क्या कहना चाहिए?ठ जब मंगलुरु कुकर विस्फोट हुआ तब कौन शासन कर रहा था? मल्लेश्वरम में बीजेपी दफ्तर के सामने धमाका हुआ है। तब शासन कौन कर रहा था एनआईए, आईबी का प्रभारी कौन है यह उनकी विफलता नहीं है? उन्होंने स्पष्ट किया, ''मैं बम विस्फोट का समर्थन नहीं कर रहा हूं। मैं इसकी निंदा कर रहा हूं लेकिन बीजेपी को इस पर राजनीति नहीं करनी चाहिए।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय का क्रांतिकारी कदम, भारत में शुरू हुई हेलीकॉप्टर आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए) ने भारत में हेलीकॉप्टर आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं (एचईएमएस) के लिए पायलट प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। इस पहल से जल्द से जल्द आपातकालीन चिकित्सा देखभाल सुनिश्चित होगी। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए) ने भारत में हेलीकॉप्टर आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं (एचईएमएस) के लिए पायलट प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। हेलीकॉप्टर को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ऋषिकेश में तैनात किया जाएगा जहां से इसे 150 किलोमीटर के दायरे में कहीं भी भेजा जा सकेगा। ताकि दुर्घटना का शिकार हुए किसी भी व्यक्ति तक चिकित्सा सुविधा पहुंचाई जा सके। इसके लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ऋषिकेश के हेलीपैड पर एक साल की अवधि के लिए एयर एम्बुलेंस उपलब्ध कराई जाएगी। हेलीकॉप्टर में एक स्ट्रेचर और आवश्यक चिकित्सा उपकरण होंगे। 100 समुद्री मील की दूरी तक एक से दो चिकित्सा कर्मियों के साथ एक मरीज के परिवहन की सुविधा होगी। ओडिशा और मध्य प्रदेश भी इसी तरह की सेवाओं में रुचि दिखा रहे हैं। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बताया था कि भारत की पहली हेलीकॉप्टर आपातकालीन चिकित्सा सेवा (एचईएमएस) उत्तराखंड से शुरू की जाएगी। दरअसल, हेलीकॉप्टर को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ऋषिकेश में तैनात किया जाएगा, जहां से इसे 150 किलोमीटर के दायरे में कहीं भी भेजा जा सकेगा।

डाक पंजीयन नं. AD -326/2024-2026 - website:www.aadhuniksamachar.com – E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com आधुनिक समाचार

आयोग के इतिहास की सबसे बड़ी परीक्षा पर लगा पेपर लीक का दाग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज।समीक्षा अधिकारी-सहायक समीक्षा अधिकारी (आरए-एआरओ) प्रारंभिक परीक्षा निरस्त होने के बाद आयोग के माथे पर एक और दाग लग गया है। वर्ष 2016 में भी गड़बड़ी के आरोप में परीक्षा निरस्त की जा चुकी थी। इस बार छात्र उग्र आंदोलन पर थे और किसी भी दशा जांच रिपोर्ट को मानने के लिए तैयार नहीं थे। शासन की ओर से समीक्षा अधिकारी (आरओ)/सहायक समीक्षा अधिकारी (एआरओ) प्रारंभिक परीक्षा-2023 को निरस्त किए जाने के बाद उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के इतिहास की सबसे बड़ी परीक्षा पर पेपर लीक का दाग लग गया है।आरओ/एआरओ के 411 पदों के लिए 1076004 अभ्यर्थियों ने आवेदन किए थे। परीक्षा के लिए प्रदेश के 58 जिलों में 2387 केंद्र बनाए गए थे। 11 फरवरी को हुई परीक्षा में 64 फीसदी अभ्यर्थी शामिल हुए थे। आयोग की किसी भी परीक्षा के लिए पहली बार इतनी अधिक संख्या में अभ्यर्थियों ने आवेदन किए थे और पहली बार किसी परीक्षा के लिए सबसे ज्यादा केंद्र भी बनाए गए थे। हालांकि, आयोग ने परीक्षा में गड़बड़ी रोकने के लिए इस बार कई नए कदम उठाए थे।पहली बार परीक्षा केंद्रों में 50 फीसदी से अधिक बाहरी कक्ष निरीक्षक तैनात किए गए थे। आयोग ने तो शासन को यह प्रस्ताव भी भेजा था कि राजस्थान की तर्ज पर यहां भी परीक्षा के दौरान इंटरनेट सेवा बंद कर दी जाएं, लेकिन इससे आम लोगों को होने वाली दिक्कत के मद्देनजर शासन ने इसकी अनुमति नहीं दी। आयोग की पूरी मेहनत पर पानी फिर गया, जब परीक्षा से डेढ़-दो घंटे पहले पेपर व्हाट्सएप पर वायरल हो गया।शुरुआत में आयोग मानने को तैयार था कि पेपर लीक हुआ है लेकिन कुछ दिनों बाद हुई पुलिस भर्ती परीक्षा में भी पेपर लीक हो गया और शासन ने पुलिस भर्ती परीक्षा निरस्त कर दी।

उत्तर प्रदेश
लोक सेवा आयोग

तेज रफ्तार ट्रक डिवाइडर तोड़ते हुए अस्पताल में घुसा, कोई हताहत नहीं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज।डिवाइडर को तोड़ते हुए ट्रक दूसरी पटरी पर खड़ी कार को रौंदने के बाद अस्पताल में घुस गया। हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। घटना में ट्रक के परखच्चे उड़ गए और अस्पताल बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयानैनी कोतवाली क्षेत्र के चाका ब्लाक के सामने रविवार की भोर में बड़ा हादसा होते-होते बच गया। प्रयागराज-मध्य प्रदेश हाईवे पर भोर में करीब साढ़े चार बजे तेज रफ्तार एक ट्रक अंसुतलित हो गया। डिवाइडर को तोड़ते हुए ट्रक दूसरी पटरी पर खड़ी कार को रौंदने के बाद अस्पताल में घुस गया। हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। घटना में ट्रक के परखच्चे उड़ गए और अस्पताल बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया।धमाके की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। यह ट्रक प्रयागराज के एक विधायक का बताया जा रहा है।

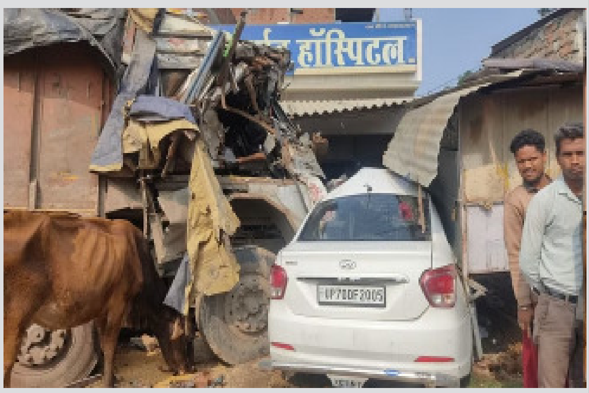

माफिया अतीक के बेटों उमर-अली का बनवाया बी वारंट, शिकंजा कसने की तैयारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज।उमेश पाल हत्याकांड में अतीक अहमद के जेल में बंद बेटों उमर व अली पर भी शिकंजा कसने की तैयारी शुरू कर दी गई है। पुलिस ने दोनों का बी वारंट बनवाकर लखनऊ व नैनी जेल में तामील करवा दिया है। अब उन्हें कोर्ट में तलब कराकर रिमांड की अर्जी दी जाएगीपुलिस सूत्रों का कहना है कि अब तक कि विवेचना में पुलिस को उमर व अली के खिलाफ पर्याप्त सबूत मिले हैं जो यह इशारा करते हैं कि इस हत्याकांड की साजिश में वह दोनों भी शामिल थे। मसलन मुख्य शूटर असद हत्याकांड से पहले कई बार लखनऊ जेल में जाकर बड़े भाई उमर व नैनी जेल में जाकर अली से मिला था। नैनी जेल में घटना के अन्य शूटर गुड्डू मुस्लिम, गुलाम व अरमान ने भी जाकर अली से मुलाकात की थी जेल भेजे गए शौलत हनीफ ने भी अपने बयान में बताया है कि अली व उमर को इस पूरी साजिश की जानकारी थी। जेल में जाकर मुलाकात करने पर असद को अली व उमर भी प्लानिंग समझाते थे। इन साक्ष्यों के आधार पर ही पुलिस ने दोनों का बी वारंट बनवाया है। साथ ही इसे संबंधित जेलों में तामील भी करवा दिया है। पुलिस सूत्रों का कहना है कि जल्द ही उन्हें कोर्ट में तलब कराकर रिमांड अर्जी दी जाएगी।बता दें कि उमर लखनऊ के प्रॉपर्टी डीलर मोहित जायसवाल के अपहरण कांड में लखनऊ जेल में बंद है। जबकि अली हत्या के प्रयास, रंगदारी समेत अन्य मामलों में नैनी जेल में निरुद्ध है। उमेश पाल हत्याकांड में अब तक 10 आरोपी जेल भेजे जा चुके हैं जबकि छह शूटरों समेत सात मिट्टी में मिल चुके हैं। जबकि 11 के खिलाफ विवेचना जारी है। इन्हीं 11 में उमर व अली भी शामिल हैं।

कोर्ट के बजाय आपस में उलझे अधिवक्ता, जज ने केस सुनने से किया इंकार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज।शुआटस नैनी के प्रोफेसर आर बी लाल की जमानत अर्जी की सुनवाई न्यायमूर्ति मंजूरानी चौहान की कोर्ट में चल रही थी। याची की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल स्वरूप चतुर्वेदी व अनुज श्रीवास्तव और राज्य सरकार की तरफ से अपर महाधिवक्ता पी के गिरी बहस कर रहे थे।दोनों पक्ष के वकीलों को कोर्ट के बजाय आपस में ही बहस करते देख जज ने स्वयं को केस की सुनवाई से अलग कर लिया। कहा कि वकीलों के इस आचरण सराहनीय नहीं कहा जा सकता। कोर्ट ने कहा केस की सुनवाई के लिए दूसरी पीठ नामित की जाए, जिसमें वह शामिल न हो और केस फाइल मुख्य न्यायाधीश को प्रेषित कर दी।शुआटस नैनी के प्रोफेसर आर बी लाल की जमानत अर्जी की सुनवाई न्यायमूर्ति मंजूरानी चौहान की कोर्ट में चल रही थी। याची की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल स्वरूप चतुर्वेदी व अनुज श्रीवास्तव और राज्य सरकार की तरफ से अपर महाधिवक्ता पीके गिरी बहस कर रहे थे। वे कुछ समय के लिए आपस में ही उलझ गये और आपस में ही तर्क-वितर्क करने लगे, जो कोर्ट को नागवार गुजरा।

संस्कृत भाषा में टीईटी पास प्राथमिक शिक्षक चयन में पात्र नहीं, पीठ के फैसले को किया रद्द

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज।एकल पीठ के फैसले के विरुद्ध जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, मुरादाबाद की ओर से यह याचिका दाखिल की गई थी। उनका कहना था कि उप्र बेसिक शिक्षा परिषद के अधीन संचालित प्राथमिक विद्यालयों में सहायक शिक्षक पद के लिए न्यूनतम योग्यता में संस्कृत विषय से टीईटी उत्तीर्ण को नहीं रखा गया थाइलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि संस्कृत भाषा में टीईटी प्रमाणपत्र धारक प्राथमिक शिक्षक चयन के लिए पात्र नहीं हैं। न्यायमूर्ति मनोज कुमार गुप्ता व न्यायमूर्ति डी. रमेश की खंडपीठ ने फैसला सुनाते हुए एकल पीठ के आदेश को रद्द कर दिया।एकल पीठ के फैसले के विरुद्ध जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, मुरादाबाद की ओर से यह याचिका दाखिल की गई थी। उनका कहना था कि उप्र बेसिक शिक्षा परिषद के अधीन संचालित प्राथमिक विद्यालयों में सहायक शिक्षक पद के लिए न्यूनतम योग्यता में संस्कृत विषय से टीईटी उत्तीर्ण को नहीं रखा गया था। बावजूद इसके कई अभ्यर्थियों ने दावेदारी की, जिसे बीएसए ने 19 अगस्त 2014 को खारिज कर दिया।

अभ्यर्थियों ने कहा- युवा आंदोलन की जीत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज।परीक्षा निरस्त होने की पहली आधिकारिक सूचना मुख्यमंत्री के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर आई। धरना स्थल पर बैठे अभ्यर्थियों के मोबाइल फोन की घंटी बजने लगी और अभ्यर्थी खुशी से झूम उठे।आरओ/एआरओ प्रारंभिक परीक्षा निरस्त होने की घोषणा के बाद परीक्षा में शामिल अभ्यर्थियों ने कहा कि आखिर युवा आंदोलन की जीत हुई। अभ्यर्थियों के चेहरे पर सुकून दिखा और डेलीगेसी में खुशी का माहौल दिखा।परीक्षा निरस्त होने की पहली आधिकारिक सूचना मुख्यमंत्री के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर आई। धरना स्थल पर बैठे अभ्यर्थियों के मोबाइल फोन की घंटी बजने लगी और अभ्यर्थी खुशी से झूम उठे। सलोरी, बाघाड़ा, अल्लापुर, राजापुर, मम्फोर्डगंज, कटरा, तेलियरगंज, गोविंदपुर डेलीगेसी में चाय की दुकानों पर अभ्यर्थियों का जमावड़ा लग गया और उन्होंने राहत की सांस ली।अभ्यर्थियों ने कहा कि यह परीक्षा तो आयोग को पहले ही अपने स्तर से पहले निरस्त कर देनी चाहिए थी। साक्ष्य सामने थे और अभ्यर्थियों ने हलफनामे के साथ साक्ष्य उपलब्ध कराए थे। ऐसे में परीक्षा पर निणन्य लेने में हो रही देरी के पीछे कोई वजह नहीं रह गई थी। इस बात के साक्ष्य पहले से उपलब्ध थे कि पेपर लीक हो गया है। जांच का विषय तो यह है कि पेपर लीक कहां से हुआ।छात्र नेता आदर्श सिंह भदौरिया, अजय यादव सम्राट, अनिल सिंह आदि ने कहा कि परीक्षा निरस्त होना अभ्यर्थियों के संघर्ष की विजय है। प्रतियोगी छात्र संघर्ष समिति के अध्यक्ष अवनीश पांडेय और मीडिया प्रभारी प्रशांत पांडेय ने कहा कि पेपर लीक रोकने के लिए सरकार को सख्त निणन्य लेने चाहिए। केवल सरकारी स्कूल या प्रतिष्ठित स्कूल ही परीक्षा केंद्र बनाए जाएं और केंद्र से पेपर लीक होने पर स्थानीय प्रशासन की जिम्मेदारी भी तय की जाए।

REEXAM
RO-ARO

आधुनिक
गेस्ट हाउस

- वाटर प्रूफ शेड
- पार्किंग की सुविधा
- मन्दिर की सुविधा
- सी.सी.टीवी.
- छोटे-बड़े कार्यक्रमों के अलग-अलग रेट
- 45000 sq. feet. एरिया
- हरे-भरे वातावरण
- AC कमरा (VIP)

CALL: 9519313894,9415608783, 9415608710

आधुनिक समाचार पब्लिशिंग हाउस, यूपीएसआईडीसी, रेमण्ड रोड, औद्योगिक थाने के पीछे भारत पेट्रोलियम के पहले, औद्योगिक क्षेत्र, नैनी, प्रयागराज

बारिश से धंसी सड़क, गड्ढे में फंसी कार, राजधानी सहित पूरे प्रदेश में बिगड़ा मौसम, जारी हुआ अलर्ट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

लखनऊ।लखनऊ में भारी बारिश के बाद कई सड़कों में जलभराव हो गया है। शहर के कुछ स्थानों पर सड़क धंस भी गई है। हालांकि इस घटना से किसी प्रकार की जान का खतरा नहीं हुआ है। बारिश के साथ प्रदेश में 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं भी चलीं। प्रदेश के अधिकतर इलाकों में तीन से चार डिग्री तक की गिरावट अधिकतम तापमान में दर्ज की गई। ओलावृष्टि, बारिश, गरज चमक और बिजली गिरने के आसार हैं।गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, हरदई, लखनऊ, बाराबंकी, अमेठी, सुल्तानपुर, अयोध्या, अंबेडकरनगर, जौनपुर, गाजीपुर, आजमगढ़, मऊ, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, संतकबीरनगर, बस्ती, कुशीनगर, महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, संभल, बदायूं, प्रयागराज, प्रतापगढ़, सोनभद्र, मिर्जापुर, चंदौली, वाराणसी, संत रविदासनगर व आसपास समेत कई इलाकों में तेज हवा, बिजली गिरने को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है।

महाशिवरात्रि पर घर बैठे पाएं काशी विश्वनाथ का प्रसाद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

भोले भक्तों के लिए खुशखबरी है। महाशिवरात्रि पर बाबा विश्वनाथ धाम का प्रसाद आसानी से पा सकेंगे। काशी विश्वनाथ धाम का प्रसाद स्पीड पोस्ट के जरिये देशभर में भक्तों तक पहुंचाया जाएगा। इसके लिए श्रद्धालुओं को ई-मनीऑर्डर भेजना होगा।महाशिवरात्रि की तैयारियां जोरों पर है। काशी में हर तरफ भोले भक्तों द्वारा इस दिन को खास बनाने की तैयारी चल रही है। बाबा विशन्नाथ का दर्शन करने केलिए महाशिवरात्रि पर भक्तों का रेला लगेगा। वहीं बाबा का प्रसाद पाने के लिए भक्तों को खास सुविधा भी दी जाएगी।इस महाशिवरात्रि पर श्रद्धालु डाक से काशी विश्वनाथ धाम का प्रसाद मंगवा सकते हैं। इसके लिए उनको 251 रुपये का ई-मनीऑर्डर भेजना होगा। इस बार आठ मार्च को महाशिवरात्रि मनाई जाएगी। पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि डाक विभाग और श्री काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट के बीच हुए एक समझौते के तहत प्रसाद देश भर में स्पीड पोस्ट सेवा से लोगों को उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रवर अधीक्षक डाकघर, वाराणसी (पूर्वी) मंडल-221001 के नाम से ई-मनीऑर्डर भेजना होगा। प्रसाद 201 रुपये में वाराणसी सिटी डाकघर के काउंटर से भी प्राप्त किया जा सकता है।

HAPPY
MAHA
SHIVRATRI

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के 42 छात्रों को मिलेगी छात्रवृत्ति, तैयार कराए जा रहे डॉक्यूमेंट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के 42 छात्रों को छात्रवृत्ति मिलेगी। इनमें पांच छात्राएं भी शामिल हैं।

छात्रों की सूची आने के बाद अब संस्कृत विश्वविद्यालय में छात्रों से जुड़े कागजात तैयार कराए जा रहे हैं। यह पहल केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की ओर से की गई है। विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष प्रो. हरिशंकर पांडेय ने बताया कि जिन छात्रों का नाम सूची में आया है, उनके संबंधित संकायाध्यक्ष को पत्र भेजकर छात्रों के बैंक खाते के डिटेल, आधार कार्ड, परिचय पत्र की छायाप्रति, शैक्षिक प्रमाण पत्र की सत्यापित छायाप्रति मांगी गई है। संकायाध्यक्ष ने बताया कि संबंधित छात्रों को पहले से किसी तरह की कोई छात्रवृत्ति न मिलने का शपथ पत्र भी देना होगा।केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की ओर से संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के जिन 42 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाएगी, उसमें पांच छात्राओं का नाम शामिल है। इसमें आचार्य से राजकुमारी, धीरज दूबे, शिवांश मिश्रा, गंगेश्वर पांडेय, मंगल वर्धन, अर्चना कुमारी और शास्त्री से शिवाकांत पांडेय, आनंद रेशमी, नारायण मिश्रा, मोहन, आशीष कुमार पांडेय, पुष्कर तिवारी, शिवम कुमार शुक्ला का नाम शामिल है। इसके अलावा विद्यावारिधि से विनीत कुमार शुक्ला, ब्रह्माजी द्विवेदी, नीतेश कुमार द्विदेदी, प्रज्ञा द्विवेदी को भी छात्रवृत्ति मिलेगा। इसके साथ ही उत्तर मध्यमा प्रथम के छात्रों का नाम भी सूची में शामिल है।

यादव महाकुंभ में बोले मप्र के मुख्यमंत्री मोहन यादव, कहा-मेरे सीएम बनने कई लोगों के पेट में हुआ दर्द

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

लखनऊ में हो रहे यादव महाकुंभ में हिस्सा लेने के लिए मप्र के सीएम मोहन यादव पहुंचे। यहां वक्ताओं ने इशारों-इशारों में सपा पर तीखा हमला किया है। लखनऊ के बिजनौर इलाके में हो रहे यादव महाकुंभ में हिस्सा लेने के लिए मप्र के मुख्यमंत्री मोहन यादव लखनऊ पहुंचे। लखनऊ जिले के बिजनौर के गुडौरा मैदान में होने वाले महाकुंभ को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव सहित के अलावा भाजपा के वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मोहन यादव ने कहा मेरे आने के पहले बैठक करके इस कार्यक्रम को फेल बनाने की प्लानिंग की जा रही थी। यही नहीं समाज के कुछ लोगों को मेरे सीएम बनने से खुशी नहीं हुई बल्कि उनके पेट में दर्द हुआ। उन्होंने कहा कि यादव समाज धर्म के मार्ग में चलने वाला समाज है। उसने कभी धर्म को पीछे नहीं छोड़ा है। मोहन यादव ने कहा कि यूपी ही वह धरती है जो नारा देती हैं उसे साकार भी करती है। प्रदेश के साथ अपने रिश्ते का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मेरे पूर्वज 400 साल पहले आजमगढ़ से ही मध्यप्रदेश गए थे। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण ने कष्ट सहे लेकिन झुके नहीं। सनातन धर्म भी किसी के आगे नहीं झुका। भाजपा का आभार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि मेरे सीएम का पद दिया गया। जबकि मेरे विधानसभा क्षेत्र में यादव के 500 वोट नहीं हैं। मैं वहां से तीन बार से चुनाव जीतता आया हूं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मनीष यादव ने कहा कि यादव महाकुम्भ के माध्यम से यादव समाज को एकजुट किया गया। एक परिवार ने यादव समाज का शोषण कर गुलाब बनाकर रखा है। अब समाज मोहन यादव के साथ है।

अपहरणकर्ताओं से पुलिस की मुठभेड़

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कानपुर।कानपुर में अगवा मासूम के अपहरणकर्ताओं से पुलिस की मुठभेड़ हो गई। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में अपहरण करने वालों के पैर में गोली लगी है। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया है। कई दिनों से मासूम कह पुलिस तलाश कर रही थी, जिसे सकुशल बरामद कर लिया गया ह मूलरूप से उननव, सफीपुर निवासी छोटू राजपूत परिवार के साथ फूलबाग फल मंडी के पास रहते हैं। छोटू सहालग में वेटर का काम करने के साथ ही सब्जी का ठेला लगाते हैं। एक सप्ताह पहले छोटू का छोटा बेटा कार्तिक (2) अपनी बड़ी बहन वैष्णवी व भाई शिब्बू के साथ शाम को फुटपाथ पर खेल रहा था।तभी बाइक से आए दो अपहर्ता कार्तिक को बहलाकर बाइक से अगवा कर ले गए। सीसीटीवी कैमरे को ट्रेस करते हुए पुलिस को अपहर्ता आखिरी बार जीटी रोड स्थित पैरशूट फैक्टरी के पास श्याम नगर पुल पर जाते दिखे थे। मामले में फीलखाना थाने में अपहरण की रिपोर्ट दर्ज हुई थी।

ऐसे अपराधियों को पुलिस भेजेगी जेल, बाप-दाद की संपत्ति तक होगी जब्त- सीएम योगी ने की घोषणा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

गोरखपुर।सीएम योगी आदित्यनाथ ने रविवार को बक्शीपुर स्थित जुबिली इंटर कॉलेज में प्रोजेक्ट अंलकार योजना का शिलान्यास किया।

1500 विद्यार्थियों को टैबलेट और 3000 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन वितरित किए गए। मुख्यमंत्री ने 15 विद्यार्थियों को टैबलेट और 10 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन अपने हाथों से प्रदान कर इसका शुरूआत की।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश भर के युवाओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि प्रदेश में कोई भी युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। यदि किसी ने ऐसा किया तो वह जिंदगी भर के लिए जेल में सड़ेगा। यही नहीं, उसके बाप-दादा की प्रॉपर्टी भी सरकार जब्त कर लेगी। सीएम योगी रविवार को राजकीय जुबली इंटर कॉलेज के मैदान में विद्यार्थियों को स्मार्टफोन/टैबलेट वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में 1500 विद्यार्थियों को टैबलेट और 3000 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन वितरित किए गए। मुख्यमंत्री ने 15 विद्यार्थियों को टैबलेट और 10 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन अपने हाथों से प्रदान किया।इस अवसर पर सीएम ने 26 माध्यमिक विद्यालयों में 17.35 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट अलंकार के कार्यों तथा 141 माध्यमिक विद्यालयों में 7.58 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले 330 प्रीमियम स्मार्ट क्लास रूम का शिलान्यास भी किया। चार इंटर कॉलेजों के प्रधानाचार्यों को उन्होंने स्मार्ट क्लास का प्रमाण पत्र भी सौंपा। समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी में सिर्फ स्मार्ट सिटी ही नहीं होगी बल्कि स्मार्टफोन और स्मार्ट क्लास से जुड़कर यूपी के युवा पूरी दुनिया के सामने स्मार्ट युवा बनेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि नवंबर 2021 में स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना लांच कर स्मार्टफोन और टैबलेट वितरण का कार्यक्रम शुरू किया गया। इसका उद्देश्य युवा शक्ति को डिजिटली सक्षम बनाना है ताकि भविष्य में कोरोना जैसी कोई महामारी पठन पाठन को बाधित न कर आए।

ऐसे अपराधियों को पुलिस भेजेगी जेल, बाप-दाद की संपत्ति तक होगी जब्त- सीएम योगी ने की घोषणा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सीएम योगी आदित्यनाथ ने रविवार को बक्शीपुर स्थित जुबिली इंटर कॉलेज में प्रोजेक्ट अंलकार योजना का शिलान्यास किया। 1500 विद्यार्थियों को टैबलेट और 3000 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन वितरित किए गए। मुख्यमंत्री ने 15 विद्यार्थियों को टैबलेट और 10 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन अपने हाथों से प्रदान कर इसका शुरूआत की।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश भर के युवाओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि प्रदेश में कोई भी युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। यदि किसी ने ऐसा किया तो वह जिंदगी भर के लिए जेल में सड़ेगा। यही नहीं, उसके बाप-दादा की प्रॉपर्टी भी सरकार जब्त कर लेगी। सीएम योगी रविवार को राजकीय जुबली इंटर कॉलेज के मैदान में विद्यार्थियों को स्मार्टफोन/टैबलेट वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में 1500 विद्यार्थियों को टैबलेट और 3000 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन वितरित किए गए। मुख्यमंत्री ने 15 विद्यार्थियों को टैबलेट और 10 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन अपने हाथों से प्रदान किया।इस अवसर पर सीएम ने 26 माध्यमिक विद्यालयों में 17.35 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट अलंकार के कार्यों तथा 141 माध्यमिक विद्यालयों में 7.58 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले 330 प्रीमियम स्मार्ट क्लास रूम का शिलान्यास भी किया। चार इंटर कॉलेजों के प्रधानाचार्यों को उन्होंने स्मार्ट क्लास का प्रमाण पत्र भी सौंपा।

प्रदीप चौधरी और सपा की इकरा हसन के बीच कांटे की टक्कर के आसार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

वाराणसी।भारतीय जनता पार्टी ने कैराना लोकसभा सीट से जाट चेहरे पर दांव खेला है। वहीं समाजवादी की और से इकरा हसन मैदान में होंगी। आगामी चुनाव में दोनों के बीच कांटे की टक्कर के आसार बन रहे हैं।भाजपा हाईकमान ने इस बार लोकसभा 2024 के मद्देनजर कैराना लोकसभा सीट पर प्रदीप चौधरी को दूसरी बार प्रत्याशी घोषित करके अपना राजनीति समीकरण मजबूत किया है। इस बार भी लोकसभा सीट पर भाजपा के प्रदीप चौधरी और सपा प्रत्याशी इकरा हसन के बीच आमने सामने का मुकाबले के आसार बन गए हैं। बसपा की ओर से प्रत्याशी घोषित न होने से राजनैतिक दलों की निगाहें लगी हैंभाजपा के सांसद हुकुम सिंह के निधन के बाद कैराना लोकसभा उपचुनाव 2018 में भाजपा हाईकमान ने उनकी बेटी मृंगाका सिंह को टिकट देकर चुनाव मैदान में उतारा था। रालोद-सपा, बसपा और कांग्रेस प्रत्याशी का गठजोड़ होने पर उपचुनाव में हसन परिवार की तबस्सुम हसन ने भाजपा प्रत्याशी मृंगाका सिंह को पराजित कर दिया था।वर्ष 2019 में भाजपा हाईकमान ने कैराना लोकसभा सीट पर सहारनपुर जिले के नुकड़ और गंगोह विधानसभा से दो बार विधायक रहे प्रदीप चौधरी को प्रत्याशी बनाकर चुनाव मैदान में उतारा था। लोकसभा चुनाव 2019 में भाजपा के प्रदीप चौधरी ने गठबंधन की प्रत्याशी तबस्सुम हसन को 92 हजार 160 मतों से पराजित करके विजयी हासिल की थीभाजपा सांसद प्रदीप चौधरी को 5 लाख 66 हजार 961 वोट मिली थी, जबकि हसन परिवार की बहु तबस्सुम हसन को 4 लाख 74 हजार 801 वोट मिले थे। इस बार तबस्सुम हसन की बेटी इकरा हसन को सपा ने प्रत्याशी घोषित किया है।

बदलेंगे पश्चिम के समीकरण, संजीव बालियान रहेंगे भाजपा का जाट चेहरा, होगा ये फायदा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कानपुर।भाजपा ने लोकसभा चुनाव के लिए पश्चिम के आठ प्रत्याशी घोषित कर दिए हैं। वहीं, पार्टी ने मेरठ और गाजियाबाद में बदलाव के संकेत दिए हैं। संजीव बालियान भाजपा के जाट चेहरे के रूप में पश्चिम में बने रहेंगे।लंबे समय से चली आ रही अटकलों के बीच आखिरकार रालोद की एनडीए में एंट्री हो गई है। रालोद अध्यक्ष जयंत सिंह ने दिल्ली में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। इसके बाद एक्स पर दोनों तरफ से पोस्ट भी किए गए।रालोद अध्यक्ष की ओर से एनडीए में शामिल होने की पुष्टि की गई। शनिवार को दिल्ली में रालोद अध्यक्ष ने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात की। इस दौरान गृह मंत्री अमित शाह भी मौजूद रहे। जयंत सिंह की ओर से एक्स पर पोस्ट की गई कि विकसित भारत के संकल्प और अबकी बार चार सौ पार के नारे को पूरा करने के लिए एनडीए तैयार है।भाजपा अध्यक्ष ने भी उनके एनडीए में शामिल होने के निणय्र का स्वागत किया। उधर, सोमवार को रालोद अध्यक्ष की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की संभावना है। रालोद के एनडीए में शामिल हो जाने के बाद पश्चिम यूपी के राजनीतिक समीकरण पर असर पड़ेगा।विधानसभा चुनाव 2022 में रालोद ने नौ सीटों पर जीत दर्ज की थी। इनमें अकेले मुजफ्फरनगर में ही चार सीटें जीती थीं, जबकि शामली में भी रालोद ने दो सीटें जीती थीं। यही नहीं, बड़ौत समेत कई सीटों पर बेहद नजदीक अंतर रहा था। भाजपा और रालोद का मानना है कि गठबंधन होने से दोनों को ही पश्चिम उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव में फायदा होगा।

अस्पताल और विद्यावलय में जल रही थी घरेलू बिजली, दोषी मिलने पर इन सभी पर हुई कार्रवाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

गोरखपुर।गोरखपुर के चौरीचौरा बिजली खंड क्षेत्र में एक निजी अस्पताल और विद्यावलय में घरेलू बिजली उपभोग की जा रही थी। चेयरमैन ने करवाई जांच, मिले दोषी। अधिशासी अभियंता और दो तकनीकी कर्मी निलंबित, दो एसडीओ को कारण बताओ नोटिस, जबकि दो अवर अभियंताओं को चार्जशीट जारी की गई।गोरखपुर स्थित चौरीचौरा खंडक्षेत्र के एक अस्पताल और हैप्पी मार्डन स्कूल में घरेली बिजली कनेक्शन से बिजली प्रयोग होने की जांच में दोषी पाए जाने पर अभियंताओं पर कार्रवाई हुई है। अधिशासी अभियंता चौरीचौरा मनीष झा एक दिन पहले ही निलंबित कर दिए गए।शनिवार की देर शाम दो एसडीओ को कारण बताओ नोटिस, दो अवर अभियंता को चार्जशीट और दो तकनीकी कर्मियों को भी निलंबित कर दिया गया है। इसके अलावा बिलिंग कंपनी क्वेश क्रॉप के दो मीटर रीडरों को हटाए जाने का निर्देश जारी किया गया।टीम ने इसकी रिपोर्ट प्रबंध निदेशक और चेयरमैन को भेजी थी। बुधवार शाम प्रबंध निदेशक ने चौरी चौरा खंड के अधिशासी अभियंता मनीष झा को निलंबित कर दिया। साथ ही जेई और एसडीओ पर कार्रवाई के लिए मुख्य अभियंता को निर्देशित किया था। इसके बाद से ही विभाग अपने अधिकारियों को बचाने में जुटा था। लेकिन एमडी ने मामले में फिर से अधिकारियों को कार्रवाई के निर्देश दिए, तब जाकर शनिवार को कार्रवाई हुई है।

फाइलें दबाकर बैठे थे बाबू, कार्रवाई के आदेश पर खोज निकालीं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कानपुर।समाज कल्याण विभाग की शादी अनुदान व पारिवारिक लाभ योजना में अब सभी 855 अपात्रों से वसूली होगी। वहीं, रुपये न लौटाने वालों पर रिपोर्ट दर्ज होगी।कानपुर में शादी अनुदान और पारिवारिक लाभ योजना की जिन फाइलों के गायब होने की बात कही जा रही थी, वे समाज कल्याण विभाग की अलमारियों में ही मिल गईं। फाइलें गायब होने की खबर अमर उजाला में प्रकाशित होने के बाद सीडीओ सुधीर कुमार ने समाज कल्याण अधिकारी को तलब कर बाबू के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने के आदेश दिए थे।इस कार्रवाई के डर से बाबुओं ने फाइल खोज निकालीं। सीडीओ ने 855 अपात्रों को नोटिस जारी कर अनुदान वसूलने के निर्देश दिए हैं। वर्ष 2021 में तत्कालीन जिलाधिकारी आलोक तिवारी ने समाज कल्याण विभाग की ओर से संचालित शादी अनुदान और पारिवारिक लाभ योजना के करीब तीन वर्ष के लाभार्थियों की जांच कराई थी।इसमें शादी अनुदान से जुड़े 244 और पारिवारिक लाभ योजना के 611 लाभार्थी अपात्र मिले थे। इन्हें गलत तरीके से 2.32 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया था। डीएम ने संबंधित अधिकारियों और बाबुओं पर कार्रवाई करते हुए अपात्रों से वसूली के निर्देश दिए थे। हालांकि, तीन साल तक किसी अधिकारी ने वसूली पर ध्यान नहीं दिया। विभाग से अपात्रों से वसूली की जानकारी मांगी गई, तो पता चला कि फाइल ही गायब हैं।

हर महीने दस करोड़ की बिजली चोरी, साल भर में एक फीसदी घटी राजस्व वसूली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कानपुर।केस्को के आंकड़ों के अनुसार, हर महीने 1.82 करोड़ यूनिट बिजली चोरी हो रही है। बीते वर्ष की तुलना में इस वर्ष 1.46 फीसदी बिजली चोरी के मामले बढ़े हैं।कानपुर शहर में हर महीने 1.82 करोड़ यूनिट बिजली चोरी हो रही है। साढ़े पांच रुपये कीमत प्रति यूनिट की दर से अगर बिजली चोरी का हिसाब लगाया जाए, तो करीब 10 करोड़ रुपये की बिजली चोरी हर महीने हो रही है। यह हाल तब है जब केस्को ने बिजली चोरी रोकने के लिए अत्याधुनिक सिस्टम लगा रखे हैं। मॉनीटरिंग भी लगातार सख्त करने का दावा अधिकारी करते हैं। इसके बावजूद बीते वर्ष की तुलना में इस वर्ष बिजली चोरी का ग्राफ 1.46 फीसद बढ़ गया है।बिजली चोरी पर अंकुश लगाने के लिए मीटरों को स्मार्ट करने के अलावा केस्को समय-समय पर तमाम कवायद करता है। इसके बावजूद बिजली चोर कभी बाईपास तो कभी बिजली के खंभों के सहारे बिजली चोरी कर राजस्व को नुकसान पहुंचा रहे हैं। कई जगहों पर ई-रिक्शे और इलेक्ट्रिक वाहनों को बिजली चोरी कर चार्ज किया जा रहा है। पिछले वर्ष बिजली चोरी की घटनाएं 8.27 फीसदी थीं जो मौजूदा वर्ष में बढ़कर 9.73 फीसद हो गई है। कई उपकेंद्रों में चोरी का सिलसिला कम नहीं होने पर अधिकारियों ने बिजली चोरियों को आठ फीसद से नीचे रखने के लिए निर्देशित किया है।केस्को के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2023 से जनवरी 2024 तक 365 मिलियन यूनिट बिजली चोरी हुई है। ऐसे में हर महीने 36.5 मिलियन यानी 365 लाख यूनिट बिजली चोरी हुई। केस्को के मीडिया प्रभारी श्रीकांत रंगीला ने बताया कि इसमें से 183 यूनिट इलेक्ट्रिक लॉस है। मसलन शहर में 7000 ट्रांसफार्मर लगे हैं। सप्लाई के दौरान इनके गर्म होने से बिजली लॉस होती है, इसके अलावा फीडर में भी दो फीसद इलेक्ट्रिक लॉस होता है। ऐसे में हर माह कुल 182 लाख यूनिट बिजली चोरी हुई है।

पावर एंजेल्स सशक्तिकरण व सुगमकर्ता का तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र। स्पेशल प्रोजेक्ट फ़ॉर इक्विटी के अन्तर्गत पावर एंजेल्स सशक्तिकरण एवं नेतृत्व क्षमता प्रदान करने हेतु सुगमकर्ताओं का तीन दिवसीय प्रशिक्षण बीआरसी घूरपुर जसरा में शनिवार को संपन्न हो गया।इस कार्यशाला में उच्च प्राथमिक विद्यालय की 44 महिला शिक्षिकाओं ने भाग लिया।सन्दर्भदाताद्वय शत्रुंजय शर्मा व अतुल कुमार जायसवाल ने बताया कि विद्यालय स्तर पर कैसे मीना मंच को बालिकाओं के लिए सशक्त और उपयोगी बनाया जा सकता है तथा तीन पॉवर एंजिल के साथ कैसे बालिकाओं के सेल्फ स्टीम को पल्लवित किया जा सके।मीना मंच को हमेशा सक्रिय भूमिका में रहना चाहिए यह महज गठन तक न सीमित रहे।सुगमकर्ता उन्हें मार्गदर्शन देते हुए विविध कार्यक्रम और नवीन गतिविधियों से उन्हें अवगत कराते रहें।जेंडर स्टीरियो टाइप,गुड टच बैड टच,चाइल्ड हेल्पलाइन,एनीमिया के कारण व बचाव,संतुलित भोजन,बॉडी शेमिंग व बालिकाओं के शारीरिक परिवर्तन का मानसिक व बौद्धिक परिवर्तन पर असर को सुगम कर्ता बालिकाओं की बेहतर ढंग से काउंसिलिंग कर उनकी समस्याओं का निदान करते रहें।प्रशिक्षण के समापन के अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी जसरा अखिलेश वर्मा ने कहा सभी सुगमकर्ता शिक्षिकाएं अपने प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी का विद्यालय में उपयोग कर बालिकाओं के विकास उनकी नियमित उपस्थिति और उनकी समस्याओं के समाधान में सक्रिय भूमिका निभाएं।अंत में सभी प्रशिक्षणार्थी शिक्षिकाओं और सन्दर्भदाता को प्रशिक्षण सहभागिता प्रमाण पत्र का वितरण किया गया। प्रशिक्षण में नाज़िया सुल्ताना,निशा त्रिपाठी,ऊषा यादव,सुमन भटोनिया, बुशरा ख़ानम, संध्या सिंह, ज्योति जायसवाल,स्वाती गौतम,ममता गुप्ता, कंचन सिंह,रीना देवी आदि शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं।

जनपद न्यायालय में विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट में एक पद हेतु आवेदन आमंत्रित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
मीरजापुर। मा0 जनपद न्यायाधीश महोदय ने एक विज्ञप्ति के माध्यम से सर्व साधारण को सूचित करते हुये कहा कि जनपद न्यायालय मीरजापुर में विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट का एक पद रिक्त हैं।, जिस पर दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 13 के अन्तर्गत नियुक्ति हेतु मा0 उच्च न्यायालय के आदेशानुसार नियत प्रारूप पर आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। ओवदन करना वाले अभ्यर्थी सरकारी कर्मचारी हो या रहा हो, विधि सनतक हो या माननीय उच्च न्यायालय की संतुष्टि के अनुसार विधिक मामलों में विशेष अनुभव रखता हो, पदभार ग्रहण करने की तिथि से 04 वर्ष तक या 70 वर्ष की आयु तक जो पहले अपना आवेदन दिनांक 31 मार्च 2024 तक जनपद न्यायाधीश मीरजापुर में उपलब्ध करा सकता हैं। आवेदक कार्यालयावधि में आवेदन पत्र निःशुल्क जनपद न्यायाधीश, मीरजापुर कार्यालय अथवा मानीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद के बेबसाईट

लखनऊ के नेशनल पी जी कालेज मे छात्र के साथ शिक्षक की मार पीट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
लखनऊ। 2 मार्च (शनिवार)राजधानी लखनऊ के चर्चित नेशनल पी जी कालेज मे चल रहे दो दिवसीय मीडिया फेस्ट कार्यक्रम के दौरान कालेज के एक अध्यापक कुलदीप एवं पुनीत कनौजिया ने कालेज एम एक के छात्रों अमित मौर्या, प्रशांत सिंह अनन्या पाण्डेय अनुभूति तिवारी श्वेता विश्वकर्मा अभरीतांश गुप्ता के साथ गाली गलौज करते हुए मार पीट की इसे लेकर कालेज के छात्र व छात्राओं मे कालेज के शिक्षकों के खिलाफ आक्रोश बढ़ गया जिसके चलते कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया ।आपको बताते चले कि नेशनल पी जी कालेज मे शिक्षकों द्वारा छात्रों के साथ दबंगई व मार पीट का यह कोई पहला मामला नहीं है इसके पूर्व मे भी ऐसी कई घटनायें घट चुकी है मगर कालेज प्रशासन द्वारा दबंग अध्यापकों के विरुद्ध कोई ठोस कार्यवाही नहीं की जाती है और जिसके चलते कालेज के कर्मचारियों से लेकर अध्यापक तक बेलगाम होते जा रहे और आये दिन कालेज आने वाले छात्र छात्राओं व उनके अभिभावकों के साथ ऐसी अभद्रता करते रहते है ।

NATIONAL P. G. COLLEGE
BSNL
TIME

अपर जिलाधिकारी प्रशासन को दी गयी भावपूर्ण विदाइ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
मीरजापुर। अपर जिलाधिकारी प्रशासन श्री हर्षदेव पाण्डेय के स्थानांतरण होने के पश्चात शनिवार को कलेक्टेट्ट स्थित संगम सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उनको भावपूर्ण विदाई दी गयी। इस अवसर पर जिलाधिकारी श्री नवनीत सिंह चहल ने कहा कि स्थानान्तरण सेवा का एक महत्वपूर्ण अंग है। स्थानान्तरण होने के बाद उस अधिकारी की कार्यशैली याद रहती है। उन्होंने कहा कि अपर जिलाधिकारी प्रशासन ने अपने दायित्वों का बड़ी कुशलता के साथ निर्वहन किया। वे अपनी जिम्मेदारियों को बड़ी तनमयता के साथ पूरा करते थे। जिलाधिकारी ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशा व्यक्त की, वे जहां पर भी रहेंगे, अपने दायित्वों का निर्वहन इसी तरह कुशलता के साथ करते रहेंगे। मुख्य विकास अधिकारी श्री गौरव कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए उनकी कार्यशैली की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि आगे भी वे इसी तरह से अपने दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन ने जनपद में बितायें अपने कार्यकाल का अनुभव साझा करते हुए कहा कि जनपद प्रयागराज का कार्यकाल उनके लिए हमेशा यादगार रहेगा। प्रयागराज के कार्यकाल में उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला है, जो कि आगे बहुत ही लाभप्रद होगा। उन्होंने यहां के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा दिए गए सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सभी अपर जिलाधिकारियों एवं अन्य अधिकारियों के द्वारा भी उनके साथ बिताये गये अपने कार्यकाल के अनुभव को साझा किया गया। विदाई समारोह में जिलाधिकारी ने अपर जिलाधिकारी प्रशासन को मोमेण्टों भेंट कर उनको सम्मानित किया। इस अवसर पर कलेक्टेट्ट के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

द्वार गेट डॉ भीमराव अंबेडकर स्मृति द्वारा, के नाम से ही बने गेट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र। आजाद समाज पार्टी सोनभद्र ने ट्वीट कर जिलाधिकारी सोनभद्र को अवगत कराया की सोनभद्र जिला मुख्यालय रोड स्थित द्वार गेट डॉ भीमराव अंबेडकर स्मृति द्वारा, के नाम से गेट बना हुआ था जिसको पिछले साल अक्टूबर 2023 में जिला प्रशासन द्वारा मरम्त कराने के लिए कार्य शुरू किया गया था, 6 महीने वित जाने के बाद भी कार्य पूरा भी किया गया ऐसा लगता है की नाम को मिटाना चाहती है सरकार, डॉ अंबेडकर स्मृति द्वार के नाम से गेट जल्द नहीं बना तो किया जाएगा धरना प्रदर्शन।रविकान्त जिलाध्यक्ष आजाद समाज पार्टी ने बताया कि उत्तर प्रदेश में बीजेपी की सरकार है मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, भी संविधान निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हैं सर झुकाते है लेकिन भाजपा के लोग जब बाबा साहब अम्बेडकर के पार्क, मूर्ति,या गेट की बात आती है तो दोहरी करण की राजनीति करती है अम्बेडकर के विचारों को मिटाना चाहती है भाजपा उत्तर प्रदेश के रामपुर में योगी आदित्यनाथ की पुलिस प्रशासन बाबा साहब अम्बेडकर पार्क के लिए स्थानीय लोग मांग करते है तो गोली मारी जाती है ताजा घटना दर्शाता है कि दलितों का वोट बीजेपी को चाहिए, लेकिन उनको उनका हक अधिकार या महापुरुषों के नाम गेट, पार्क नही देना / बनाना चाहती है सरकार, सोनभद्र में कई बार डॉ अंबेडकर की मूर्ति को क्षतिग्रस्त किया जाता है अपराधियों को थोड़ा सा भी भाई नहीं है पुलिस प्रशासन का, मैं जिलाधिकारी सोनभद्र से मांग करता हूं ।

पत्नी की हत्या कर युवक ने की आत्महत्या, हड़कंप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज,। मेजा के दंपति के भदोही के कोईरौना थाना क्षेत्र के चकिया गांव स्थित साढ़ू के घर में शनिवार सुबह रक्तरंजित शव मिले हैं। पतनी पंद्रह दिन पहले जबकि पति चार दिन पहले मेजा से चकिया गांव पहुंचा था। बताया जा रहा है शनिवार सुबह पति पतनी में विवाद के बाद पति ने पहले पतनी की हत्या की उसके बाद खुद के गले पर धारदार हथियार से वार कर आत्महत्या कर ली। मेजा के डिघिया गांव निवासी कमला शंकर निषाद के चार लड़कों में तीसरे नंबर के राजेश निषाद (32) की शादी बर्ष 2021 में परवा निवासी शनने देवी (26) के साथ हुई थी। शादी के बाद पति-पतनी आजीविका की तलाश में गोवा चले गए और वहीं रहने लगे। बताया जा रहा है कि वहीं दोनों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ। इसके बाद शनने नाराज होकर पंद्रह दिन पहले चकिया गांव निवासी अपनी बहन सुधा के यहां चली आई। राजेश भी उसी दिन अपने गांव चला आया। चार दिन पहले वह अपनी पतनी को बुलाने के लिए चकिया गांव स्थित साढ़ू के घर गया था। बताया जा रहा है कि शुक्रवार रात एक बार फिर दोनों पति- पतनी के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ। इस पर सुधा ने समझाबुझा कर मामला शांत करा दिया था। लेकिन शनिवार तड़के सुबह पतनी-पति के बीच फिर से विवाद हो गया। बताया जा रहा है कि मामला इतना बढ़ गया कि पति ने पहले गले पर धारदार हथियार से वार कर उसकी हत्या कर दी। उसके बाद अपने गले पर भी वार कर खुद की जान ले ली। परिवार के लोग चकिया गांव के लिए सुबह ही रवाना हो चुके है। पिता का कहना है कि घटना की जानकारी पाकर जब मौके पर पहुंचे तो सुधा ने बताया कि राजेश ने पहले अपनी पतनी को मारा और फिर खुद को मार लिया।

यूपीएमएसआरए इकाई नव निर्वाचित अध्यक्ष बने विवेक सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र। राबर्ट्सगंज नगर स्थित विजयगढ़ पेट्रोल टंकी के समीप यूपीएमएसआरए इकाई का रविवार को14 वाँ वार्षिक अधिवेशन इकाई कार्यालय में सभी साथियो की उपस्थित संपन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि यु पी एम एस आर ए स्टेट्स रजनीश पाठक पर्यवेक्षक द्वारा अधिवेशन चुनाव संपन्न कराया गया नए पदाधिकारी को दी गई जिम्मेदारी। रजनीश पाठक (पर्यवेक्षक) ने बताया कि रविवार को यु पी एम एस आर ए राबर्ट्सगंज इकाई का 14 वाँ वार्षिक अधिवेशन इकाई कार्यालय में सभी साथियो की उपस्थित संपन्न हुआ,जिसमें कामरेड पाठक इकाई को अपनी बातों से इकाई को आगे ले जाने व समय से नयी कार्यकारिणी गठन करने के लिए भी सराहना किए व इकाई में नए कार्यक्रमों की भी सराहना किए। इकाई का संचालन कामरेड अमित श्रीवास्तव ने बखूबी निभाया व वरिष्ठ कामरेड उदय शंकर मालवीय ने कामरेड का स्वागत व नई इकाई को आगे ले जाने का सराहना किए, व पूर्व अध्यक्ष नवीन सिंह ने बने नयी कार्यकारिणी में अध्यक्ष रूप में काम0 विवेक सिंह चुने गये कार्यकारिणी का गठन का स्वागत किया साथ में नयी इकाई को इकाई को और जोर से काम करने को कहें। श्री पाठक ने बताया कि सभी सदस्यों की सहमति के साथ निणय लिया गया कि नए पदाधिकारी के चयन के साथ उनका जिम्मेदारी दी गई जिसमें नए उम्मीदवारों को चयन किया गया पद नाम के साथ यह पदाधिकारी संगठन को मजबूती के साथ अपना दायित्वों का निर्माण करेंगे जिसमें नयी कार्यकर्ताओं की सूची अध्यक्ष- विवेक सिंह,उपाध्यक्ष- राजेश सिंह,कोषाध्यक्ष- संजीव वर्मा ,सचिव - सरफराज अहमद,उपसचिव- राणा विजय शर्मा ,कार्यकारी सदस्य-,- राहुल सिंह , राहुल प्रजापति , सचिन शुक्ला रितेश शर्मा ,अमित शर्मा ,नवीन सिंह आदि लोग मौजूद रहे।सभी पदाधिकारी व अतिथियों का अंत में पूर्व अध्यक्ष नवीन सिंह द्वारा आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम को समाप्त किया गया।

ANNUAL GEN BODY MEETING

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर एण्ड सेफ्टी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
फायर सेफ्टी मैनेजमेन्ट कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन इंजीनियर, सिस्टम सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी मैनेजमेन्ट के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
महानिदेशक
अग्निशमन सुरक्षा एवं आपात सेवा
उत्तर प्रदेश
★C.O.P.A. ★Electrician ★Fire Safety & Industrial Security ★Computer Hardware & Maintenance
★Fitter ★Computer Application ★Welding Technology
★Security Service ★Repair of Refrigerator & A.C. ★Computer Teacher Training
★Electric Technician ★Certificate in YOGA
Message
नन्दी गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
मंत्री
स्टाम्प न्यायालय शुल्क, पंजीयन एवं नागरिक उड्डयन विभाग
उत्तर प्रदेश
मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आपकी संस्था "नैनी आद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र" द्वारा विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी "प्रवेश विवर्जिका" नाम की पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका छात्र / छात्राओं मे चेतना, सृजनात्मक शक्ति, बौद्धिक क्षमता एवं उनकी वैचारिक एवं मानसिक अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने मे अवश्य सार्थक सिद्ध होगी।
संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका " प्रवेश विवर्जिका" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं!
भवदीय
नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
Nand Goapal Gupta
नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
मंत्री
N.C.V.T. D.G.E.T से मान्यता प्राप्त
फिटर आसान किस्तों में फीस जमा करने की सुविधा COPA
छात्रवृत्ति की सुविधा 100% प्लेसमेंट की गारंटी अप्रेन्टिशिप की सुविधा
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

एलिसा पैरी योद्धा हैं हार के बावजूद स्मृति मंधाना ने बांधे कंगारू प्लेयर की तारीफों के पुल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। महिला प्रीमियर लीग (2024) के 9वें मैच में मुंबई इंडियंस ने रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को 7 विकेट से रौंदा। आरसीबी से मिले 132 रन के लक्ष्य को मुंबई को महज 15.1 ओवर में हासिल किया। बैंगलोर का बैटिंग ऑर्डर मुंबई की गेंदबाजों के आगे ताश के पत्तों की तरह बिखर गया।मुंबई इंडियंस ने एकतरफा मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को 7 विकेट से हराया। पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में आरसीबी की टीम 6 विकेट खोकर स्कोर बोर्ड पर 131 रन लगाए। टीम की ओर से एलिसा पैरी ने नाबाद 44 रन बनाए। 132 रन के लक्ष्य को मुंबई ने महज 15.1 ओवर में सिर्फ 3 विकेट खोकर हासिल कर लिया।आरसीबी की तरफ से सिर्फ एलिसा पैरी ही लड़ाई लड़ सकीं। मैच के बाद कप्तान स्मृति मंधाना ने मुंबई के खिलाफ मिली हार की वजह बताई। इसके साथ ही मंधाना ने पैरी की जमकर तारीफ भी की।

अनंत-राधिका की प्री-वेडिंग सेरेमनी में झूम उठे धोनी, माही ने आकाश अंबानी के साथ खेला डांडिया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली।भारतीय टीम के पूर्व कप्तान एमएस धोनी अनंत अंबानी की प्री-वेडिंग पार्टी के दौरान जामनगर में जमकर झूमते हुए दिखे। वह आकाश अंबानी के डांडिया खेलते हुए दिखाई दिए। धोनी के साथ क्रिकेट जगत के कई अन्य सितारे भी मौजूद थे।

अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है।एमएस धोनी को अपने पूर्व चेनन्ई सुपर किंग्स टीम के साथी ड्वेन ब्रावो के साथ डांस का आनंद लेते हुए भी देखा गया। डांस में धोनी की पतनी साक्षी भी शामिल हुईं। पूर्व भारतीय कप्तान को सलमान खान और रणवीर सिंह जैसे कुछ शीर्ष बॉलीवुड सितारों के साथ बातचीत करते हुए भी देखा गया जो इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में मौजूद हैं।एमएस धोनी को अपने पूर्व चेनन्ई सुपर किंग्स टीम के साथी ड्वेन ब्रावो के साथ डांस का आनंद लेते हुए भी देखा गया। डांस में धोनी की पतनी साक्षी भी शामिल हुईं। पूर्व भारतीय कप्तान को सलमान खान और रणवीर सिंह जैसे कुछ शीर्ष बॉलीवुड सितारों के साथ बातचीत करते हुए भी देखा गया, जो इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में मौजूद हैं। कार्यक्रम के दौरान धोनी ने तेलुगु फिल्म स्टार राम चरण से भी बातचीत की।गौरतलब हो कि धोनी की नजरें अब आईपीएल 2024 सीजन पर टिकी हैं। पूर्व भारतीय कप्तान ने पिछले सीजन के फाइनल के बाद संकेत दिए थे कि आगामी अभियान उनका अंतिम अभियान हो सकता है। संन्यास से पहले वह चेनन्ई सुपर किंग्स को छठा खिताब दिलाना चाहते हैं। सीएसके के कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने भी कहा कि धोनी आईपीएल खेलने के लिए उत्साहित हैं।धोनी को पिछले सीजन में घुटने की समस्या से जूझते हुए देखा गया था। हालांकि, नए सीजन से पहले उन्होंने इसकी सर्जरी करवाई। भारतीय विकेटकीपर ने टूर्नामेंट के लिए अपनी तैयारी काफी पहले ही शुरू कर दी थी। बता दें कि सीजन के शुरुआती मैच में 22 मार्च को चेपॉक में सीएसके का सामना आरसीबी से होगा।

इस सप्ताह की शुरुआत प्रसन्नता के साथ होगी। लेकिन बातचीत में संवत रहें। शिक्षा से जुड़े काम पर ध्यान देने की आवश्यकता है। धैर्य रखना होगा। भागदौड़ बनी रहेगी।

इस सप्ताह आत्म संवत रहने की आवश्यकता है। मन परेशान रहेगा। गुस्सा पर नियंत्रण रखना होगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के

में आशा-निराशा बनी रहेगी। नकारात्मक विचारों से बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। नौकरी में कार्यभार में बढ़ोतरी

सप्ताह के शुरुआत से वाणी में मधुरता रहेगी, लेकिन धैर्यशीलता बनाए रखने की कोशिश करें। शिक्षा से जुड़े कामों में सफलता मिलेगी। संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखना

सप्ताह के पहले दिन से मन में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने की संभावना है। शासन सत्ता का योग बन रहा है। भवन सुख मिलेगा। शिक्षा से जुड़े काम में

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में मेहनत ज्यादा होगी। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ेगी। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा। मन परेशान हो सकता है। स्वभाव में

नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। वाणी में कठोरता का भाव रहेगा, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों

इस सप्ताह परिवार के साथ धार्मिक यात्रा के योग बन रहे हैं। माता का सहयोग भी प्राप्त होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। ज्यादा उत्साही होने से बचें।

नौकरी में तरक्की होने की संभावना है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव बना रहेगा। मानसिक शांति रहेगी। गुस्सा पर काबू रखें।

परिवार में हंसी-खुशी का माहौल रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। नकारात्मक विचारों से बचाव

मन खुश रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।

पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ सकती हैं। मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

सचिन तेन्दुलकर और अक्षय कुमार की टीम के बीच होगी जंग, गली क्रिकेट की तरह होगा टीम का चयन,

सामने आया आईएसपीएल का पूरा शेड्यूल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। गली क्रिकेट की तर्ज पर इंडियन स्ट्रीट प्रीमियर लीग का आगाज होने जा रहा है। टूर्नामेंट की शुरुआत 6 मार्च से होगी और खिताबी मुकाबला 15 मार्च को खेला जाएगा। लीग की शुरुआत प्रदर्शनी मैच से होगी, जिसमें सचिन तेंदुलकर की टीम अक्षय कुमार के धुरंधरों से भिड़ती हुई नजर आएगी। खास बात यह है कि टीम का चयन उसी समय पर गली क्रिकेट वाले फॉर्मूले से किया जाएगा। यानी दोनों कप्तान मैदान के बीच खड़े होकर अपनी टीम तैयार करेंगे।आईएसपीएल टूर्नामेंट की शुरुआत 6 मार्च से होगी और टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला 15 मार्च को खेला जाएगा। बता दें कि यह पूरा टूर्नामेंट टेनिस बॉल से खेला जाना है और यह 10 ओवर के फॉर्मेट में खेला जाएगा। आईएसपीएल के पहले सीजन में कुल छह टीमें हिस्सा लेंगी और कुल 18 मुकाबले खेले जाएंगे जिसमें 2 सेमीफाइनल और फाइनल मैच भी शामिल होगा।इंडियन स्ट्रीट प्रीमियर लीग के सभी मुकाबले दादोजी कोंडदेव स्टेडियम में खेले जाएंगे। इस टूर्नामेंट में बॉलीवुड के कई दिग्गज कलाकारों ने अपनी टीम उतारी है। अमिताभ बच्चन की टीम माझी मुंबई, अक्षर कुमार की श्रीनगर के वीर, ऋतिक रोशन की बैंगलोर स्ट्राइकर्स, सूर्या की चेनन्ई सिंगम्स, राम चरण की फाल्कन राइजर्स हैदराबाद और सैफ अली खान की टाइगर्स ऑफ कोलकाता टूर्नामेंट में एक-दूसरे से भिड़ती हुई नजर आएंगी।आईएसपीएल की शुरुआत प्रदर्शनी मैच से होगी, जो 6 मार्च को खेला जाएगा। इस मुकाबले में सचिन तेंदुलकर की टीम की भिड़ंत अक्षय कुमार की टीम से होगी। प्रदर्शनी मैच में कई पूर्व दिग्गज खिलाड़ी और बॉलीवुड के स्टार्स हिस्सा लेंगे। इरफान पठान, सिद्धांत चतुर्वेदी, यूसुफ पठान, प्रतीक बब्बर, प्रवीण कुमार, राम चरण, नमन ओझा, स्टुअर्ट बिनिने, गौरव तनेजा, सुरैश रैना, एल्विस यादव, युजवेंद्र चहल, रियाज अली, रॉबिन उथप्पा, मुनव्वर फारुकी, मुनाफ पटेल जैसे बड़े नाम हिस्सा लेते हुए नजर आएंगे।6 मार्च - प्रदर्शनी मैच - मास्टर्स इलेवन बनाम खिलाड़ी इलेवन, श्रीनगर के वीर बनाम माझी मुंबई 7 मार्च - चेनन्ई सिंघम्स बनाम टाइगर्स ऑफ कोलकाता, फाल्कन राइजर्स हैदराबाद बनाम बैंगलोर स्टाइकर्स8 मार्च - चेनन्ई सिंघम्स बनाम बैंगलोर स्टाइकर्स, टाइगर्स ऑफ कोलकाता बनाम माझी मुंबई 9 मार्च - फाल्कन राइजर्स हैदराबाद बनाम माझी मुंबई, बैंगलोर स्ट्राइकर्स बनाम श्रीनगर के वीर10 मार्च - माझी मुंबई बनाम चेनन्ई सिंघम्स, टाइगर्स ऑफ कोलकाता बनाम फाल्कन राइजर्स हैदराबाद 11 मार्च - बैंगलोर स्ट्राइकर्स बनाम कोलकाता टाइगर्स, श्रीनगर के वीर बनाम फाल्कन राइजर्स हैदराबाद 12 मार्च - चेनन्ई सिंघम्स बनाम श्रीनगर के वीर, माझी मुंबई बनाम बैंगलोर स्ट्राइकर्स 13 मार्च - कोलकाता के टाइगर्स बनाम श्रीनगर के वीर, चेनन्ई सिंघम्स बनाम फाल्कन राइजर्स हैदराबाद 14 मार्च - पहला और दूसरा सेमीफाइनल 15 मार्च - फाइनल

#STREET 2 STADIUM
KVN
STRIKERS
ISPL

आईपीएल 2024 से पहले राजस्थान रॉयल्स के गेंदबाज ने उड़ाई बैटर्स की नींद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। आईपीएल 2024 से पहले राजस्थान रॉयल्स फैन्स के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आई है। ऑक्शन से पहले ट्रेड किए गए तेज गेंदबाज आवेश खान ने रणजी ट्रॉफी के सेमीफाइनल मुकाबले में गेंद से जमकर कहर बरपाया है। आवेश ने चार बड़े विकेट झटकते हुए विदर्भ के बैटिंग ऑर्डर को तहस-नहस करने का काम कियारणजी ट्रॉफी 2024 के पहले सेमीफाइनल मुकाबले में मध्य प्रदेश की भिड़ंत विदर्भ के साथ हो रही है। पहले दिन का खेल पूरी तरह से मध्य प्रदेश टीम के नाम रहा। टीम की ओर से तेज गेंदबाज आवेश खान विदर्भ के बल्लेबाजों पर कहर बनकर टूटे। आवेश की शानदार गेंदबाजी के दम पर मध्य प्रदेश ने विदर्भ को पहली इनिंग में महज 170 रन पर ढेर कियारणजी ट्रॉफी 2024 के पहले सेमीफाइनल मुकाबले में मध्य प्रदेश की भिड़ंत विदर्भ के साथ हो रही है। पहले दिन का खेल पूरी तरह से मध्य प्रदेश की टीम के नाम रहा। टीम की ओर से तेज गेंदबाज आवेश खान विदर्भ के बल्लेबाजों पर कहर बनकर टूटे और उन्होंने सिर्फ 49 रन खर्च करते हुए चार बड़े विकेट झटके।आवेश ने ध्रुव शोरे, अमन मोखड़े, अक्षय वाखरे और यश ठाकुर को पवेलियन की राह दिखाई। आवेश की शानदार गेंदबाजी के दम पर मध्य प्रदेश ने विदर्भ को पहली इनिंग में महज 170 रन पर ढेर किया। टीम की ओर से करुण नायर ने सर्वाधिक 63 रन बना राजस्थान रॉयल्स ने आईपीएल 2024 के ऑक्शन से पहले आवेश खान को लखनऊ सुपर जायंट्स से ट्रेड किया था। राजस्थान ने देवदत्त पडिक्कल के बदले आवेश खान को टीम से जोड़ा था। यही वजह है कि आवेश का रणजी ट्रॉफी के सेमीफाइनल में दमदार प्रदर्शन देखकर राजस्थान के फैन्स बेहद खुश होंगे। 22 मार्च से शुरू हो रहे इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन में राजस्थान को पहले मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स से 24 मार्च को भिड़ना है। आईपीएल में आवेश खान ने अपना डेब्यू साल 2017 में किया था। इस टी-20 लीग में आवेश अब तक कुल 47 मैच खेल चुके हैं। इस दौरान तेज गेंदबाज ने 55 विकेट अपने नाम किए हैं। आवेश ने पिछले सीजन में लखनऊ की ओर से खेलते हुए 9 मैचों में 8 विकेट निकाले थे।

श्रेयस अय्यर की रणजी ट्रॉफी में वापसी किसी बुरे सपने की तरह रही

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। श्रेयस अय्यर की रणजी ट्रॉफी में मुंबई के लिए वापसी किसी बुरे सपने की तरह रही। स्टार बल्लेबाज केवल 8 गेंदों में 3 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। पिछले कुछ समय से विवादों से घिरे श्रेयस अय्यर को संदीप वॉरियर ने क्लीन बोल्ड किया।मुंबई और तमिलनाडु के बीच रणजी ट्रॉफी 2024 का सेमीफाइनल मैच खेला जा रहा है। मुंबई की टीम में श्रेयस अय्यर की वापसी हुई लेकिन उनका प्रदर्शन बेहद खराब रहा। श्रेयस अय्यर केवल 3 रन बनाकर बनाकर पवेलियन लौट गए। अय्यर इन दिनों काफी विवादों से घिरे रहे क्योंकि घरेलू मैच नहीं खेलने के कारण उन्हें बीसीसीआई ने केंद्रीय अनुबंध से बाहर कर दिया था।बता दें कि श्रेयस अय्यर ने हाल ही में बीसीसीआई का केंद्रीय अनुबंध गंवाया था और इसके बाद पहला प्रतिस्पर्धी मैच खेलने उतरे थे।

नाथन लियोन के सामने न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों ने किया सरेंडर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। नाथन लियोन (6 विकेट) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड को 172 रन के विशाल अंतर से मात दी। न्यूजीलैंड की टीम चौथे दिन 369 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 196 रन पर ऑलआउट हुई।ऑस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैंड को पहले टेस्ट में 172 रन के विशाल अंतर से मात दी। नाथन लियोन (6 विकेट) की शानदार गेंदबाजी के सामने कीवी बल्लेबाजों ने सरेंडर किया। कीवी टीम को चौथे दिन टेस्ट जीतने के लिए 258 रन की दरकार थी लेकिन रवींद्र के अलावा कोई बल्लेबाज क्रीज पर टिक नहीं सका और उसे विशाल शिकस्त सहनी पड़ी। ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज में 1-0 की बढ़त बनाई।बता दें कि वेलिंगटन में खेले गए मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी की और 383 रन बनाए। जवाब में न्यूजीलैंड की पहली पारी 179 रन पर ऑलआउट हुई। कंगारू टीम ने पहली पारी के आधार पर 204 रन की बढ़त हासिल की। फिर ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी 164 रन पर ऑलआउट हुई और इस तरह कीवी टीम को 369 रन का लक्ष्य मिला, जिसका पीछा करते हुए वो 196 रन पर सिमटी।

पांचवें टेस्ट में इंग्लैंड को बख्शने के मूड में नहीं शुभमन गिल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले पांचवें टेस्ट मैच के लिए शुभमन गिल जोरों-शोरों से तैयारी कर रहे हैं। रांची टेस्ट में मैच विनिंग पारी खेलने के बाद गिल धर्मशाला में भी अपने बल्ले से धमाल मचाने को बेकरार नजर आ रहे हैं। बीसीसीआई के सालाना सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में प्रमोशन मिलने के बाद गिल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है, जिसमें भारतीय बल्लेबाज मैदान पर अकेले ही जमकर दौड़ लगाता हुआ नजर आ रहा है।रांची टेस्ट में मैच विनिंग पारी खेलने के बाद गिल धर्मशाला में भी अपने बल्ले से धमाल मचाने को बेकरार नजर आ रहे हैं। बीसीसीआई के सालाना सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में प्रमोशन मिलने के बाद गिल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है जिसमें भारतीय बल्लेबाज मैदान पर अकेले ही जमकर दौड़ लगाता हुआ नजर आ रहा है।सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो शुभमन गिल पीसीए स्टेडियम में जमकर दौड़ लगाते हुए दिखाई दे रहे हैं। गिल के साथ वीडियो में कोई घरेलू खिलाड़ी दौड़ लगाता हुआ दिख रहा है। इन दोनों के अलावा मैदान पर कोई भी नजर नहीं आ रहा है। गिल का यह वीडियो काफी तेजी से वायरल हो रहा है और फैन्स उनकी कड़ी मेहनत की जमकर तारीफ कर रहे हैं।शुभमन गिल का प्रदर्शन रांची में खेले गए चौथे टेस्ट मैच में शानदार रहा था। गिल ने पहली पारी में 38 रन कूटे थे, तो दूसरी इनिंग में उनके बल्ले से मैच विनिंग पारी निकली थी। गिल ने 52 रन की नाबाद पारी खेली थी और ध्रुव जुरैल संग मिलकर छठे विकेट के लिए 72 रन की अटूट साझेदारी निभाई थी। गिल इस सीरीज में अब तक खेले 4 मैचों की 8 पारियों में 48.86 की औसत से 342 रन ठोक चुके ह ‟भारतीय टीम पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में 3-1 की अजेय बढ़त पहले ही हासिल कर चुकी है। रांची में रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम इंडिया ने अंग्रेजों को 5 विकेट से मात देते हुए सीरीज को अपने नाम किया। हालांकि, सीरीज की शुरुआत भारतीय टीम के लिए अच्छी नहीं रही थी और टीम को पहले मैच में 28 रन से हार का सामना करना पड़ा था। इसके बाद रोहित की पलटन ने सीरीज में जोरदार कमबैक करते हुए अगले तीनों टेस्ट मैच में जीत का स्वाद चखा।

15 साल बाद न्यूजीलैंड की धरती पर ग्लेन फिलिप्स ने किया कमाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट के दूसरे दिन मैच में काफी पिछड़ने के बाद न्यूजीलैंड ने तीसरे दिन धमाकेदार वापसी की। ऑलराउंडर ग्लेन फिलिप्स ने अपनी गेंदबाजी से चमक बिखेरी। कभी विकेट के पीछे से शिकार करने वाले फिलिप्स ने ग्लव्स उतारकर ऑफ स्पिन गेंदबाजी करने शुरू कर दी। अब वह अपनी गेंदबाजी से कहर बरपा रहे हैं।ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच विकेट लेकर ग्लेन फिलिप्स ने इतिहास रच दिया। 15 साल में घरेलू मैदान पर न्यूजीलैंड के किसी स्पिनर ने पहली बार पांच विकेट लेने का कारनामा किया है। फिलिप्स ने तीसरे दिन सुबह उस्मान ख्वाजा के बड़े विकेट के साथ विकेट लेने की शुरुआत की। ग्रीन और ट्रेविस हेड 46 रन की तेज साझेदारी कर न्यूजीलैंड के लिए खतरा बन रहे थे।ऑस्ट्रेलिया के लिए पहली पारी के हीरो कैमरून ग्रीन और ट्रेविस हेड 46 रन की तेज साझेदारी कर न्यूजीलैंड के लिए खतरा बन रहे थे। फिलिप्स ने हेड और मिचेल मार्श को लगातार गेंदों पर आउट कर दिया। इसके बाद एलेक्स कैरी और फिर ग्रीन को आउट कर अपना पांचवां विकेट हासिल किया।

पहले दिन तेज गेंदबाजों ने बरपाया कहर, मजबूत स्थिति में मुंबई और मध्य प्रदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। रणजी ट्रॉफी 2024 के दोनों सेमीफाइनल मैचों के शुरुआती दिन शनिवार को तेज गेंदबाजों का दबदबा देखने को मिला। मध्य प्रदेश ने विदर्भ को पहली पारी में 170 रनों पर रोक दिया, जबकि खिताब की प्रबल दावेदार मुंबई ने तमिलनाडु को सिर्फ 146 रनों पर समेट दिया रणजी ट्रॉफी 2024 में शनिवार को सेमीफाइनल मुकाबले शुरू हो गए। दोनों सेमीफाइनल मैचों का पहला दिन तेज गेंदबाजों के नाम रहा। एक तरफ जहां मध्य प्रदेश के तेज गेंदबाजों ने विदर्भ को पहली पारी में 170 रनों पर रोक दिया। वहीं खिताब की प्रबल दावेदार मुंबई ने तमिलनाडु को सिर्फ 146 रनों पर समेट दिया।पहले सेमीफाइनल की बात करें तो मध्य प्रदेश के स्टार तेज गेंदबाज आवेश खान ने 4 विकेट लेकर विदर्भ की पहली पारी को 170 रन पर समेट में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मध्य प्रदेश ने पहली पारी में एक विकेट गंवाकर 47 रन बना लिए हैं। दिन का खेल समाप्त होने तक हिमांशु (26) और यश (10) नाबाद लौटे।आवेश को इस सीजन में रणजी ट्रॉफी में संघर्ष करते हुए देखा गया था। आवेश 6 पारियों में केवल 6 विकेट लिए हैं, लेकिन सेमीफाइनल में अपने शुरुआती स्पैल में उन्होंने सनसनीखेज प्रदर्शन किया। उन्होंने ध्रुव शोरे का विकेट लेकर मध्य प्रदेश को सफलता दिलाई और फॉर्म में चल रहे सलामी बल्लेबाज अथर्व को भी आउट किया।हालांकि, विदर्भ के लिए करुण नायर ने अर्धशतकीय पारी खेली। नायर ने 63 रन बनाए। मध्य प्रदेश के लिए आवेश ने 49 रन देकर 4 विकेट लिए, जबकि वेंकटेश अय्यर और कुलवंत खेजरोलिया ने दो-दो विकेट हासिल किए।दूसरे सेमीफाइनल मैच में मुंबई के तेज गेंदबाज शार्दुल ठाकुर और तुषार देशपांडे ने तमिलनाडु की मजबूत बल्लेबाजी लाइनअप के खिलाफ कहर बरपाया। तमिलनाडु ने अपने पहले 4 विकेट केवल 17 रन पर खो दिए थे और ऐसा लग रहा था कि उनकी पहली 100 रन तक भी नहीं पहुंच पाएगी।

ऑस्ट्रेलिया की न्यूजीलैंड पर जीत से भारत को हुआ जबरदस्त फायदा, ऐसा है अंक तालिका का हाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया ने रविवार को वेलिंगटन में न्यूजीलैंड को पहले टेस्ट में 172 रन के विशाल अंतर से मात देकर दो मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बनाई। कैमरन ग्रीन (174) और नाथन लियोन (10 विकेट) के शानदार प्रदर्शन की मदद से कंगारू टीम ने आसानी से पहला मैच अपने नाम किया।ऑस्ट्रेलिया ने वेलिंगटन में खेले गए पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड को 172 रन के विशाल अंतर से मात दी। ऑस्ट्रेलिया की जीत से विश्व टेस्ट चैंपियनशिप प्वाइंट्स टेबल में भारत को जबरदस्त फायदा हुआ और वो नंबर-1 बनी। न्यूजीलैंड की टीम ने शीर्ष स्थान गंवाया और अब वो दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच दूसरा टेस्ट 8 मार्च से क्राइस्टचर्च में खेला जाएगा।ऑस्ट्रेलिया की जीत से भारतीय टीम को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की प्वाइंट्स टेबल में जबरदस्त फायदा हुआ। भारतीय टीम अब डब्ल्यूटीसी प्वाइंट्स टेबल में नंबर-1 बन गई है। ऑस्ट्रेलियाई की जीत का मतलब है कि न्यूजीलैंड के 5 मैचों में 36 प्वाइंट्स है और उसके प्रतिशत गिरकर 60 हो गए हैं। भारत के 64.58 प्रतिशत हैं और इसलिए वो नंबर-1 बन गई है।

सम्पादकीय

महादेव ने क्यों काटा ब्रह्मा का पांचवां सिर, संस्कृति के पन्नों से होता है खुलासा

भगवान शिव ने परमपिता ब्रह्मा की ऐसी कामासक्त दशा देखी, तो उन्हें पिता के मन में पुत्री के लिए ऐसा भाव देखकर क्रोध आ गया। ब्रह्मा द्वारा सृष्टि के रचना-कर्म का प्रयास जब आगे नहीं बढ़ा, तो ब्रह्मा ने अपने ही शरीर को दो भागों में विभक्त कर लिया। एक भाग पुरुष और दूसरा भाग स्त्री का हो गया। पुरुष का नाम 'मनु' और स्त्री का नाम 'ब्राह्मी' था। इस तरह मनु, ब्रह्मा का पुत्र और ब्राह्मी, उनकी पुत्री हुई। परंतु देवर्षि नारद ने किसी कारणवश ब्रह्मा को यह शाप दिया था, जिसके फलस्वरूप ब्रह्मा के मन में अपनी ही पुत्री ब्राह्मी के प्रति कामना उत्पन्न हो गई। ब्राह्मी का सौंदर्य अप्रतिम था, जिसे देखकर सृष्टिकर्ता अपनी रचना पर मुग्ध हो गए। वह ब्राह्मी को टकटकी लगाए देखते रहे। उनकी आंखों में अपनी पुत्री के लिए स्नेह और आशीष का भाव नहीं, अपितु उसे प्राप्त करने की कामना थी!ब्राह्मी ने जब परमपिता ब्रह्मा की आंखों में इस तरह का भाव देखा, तो वह घबराकर मुड़ी और ब्रह्मा के बाईं ओर जाकर खड़ी हो गई। परंतु ब्रह्मा ऐसे मोहित थे कि ब्राह्मी को देखने के लिए बाईं ओर उनका एक सिर प्रकट हो गया। यह देखकर ब्राह्मी को बहुत आश्चर्य हुआ। वह फिर मुड़ी और ब्रह्मा के दाहिनी ओर चली गई। परंतु ब्रह्मा उसे देखते रहना चाहते थे, तो उनका एक और सिर दाहिनी ओर निकल आया। ब्राह्मी असहज हो गई। वह घूमकर ब्रह्मा के पीछे चली गई। लेकिन यह क्या! ब्रह्मा का चौथा सिर पीछे की ओर प्रकट हो गया। वह पुनः ब्राह्मी को मुग्ध-भाव से देखने लगे। ब्राह्मी स्तब्ध थी। पिता के मन में पुत्री के लिए ऐसा भाव! फिर ब्राह्मी ने अपना अंतिम प्रयास किया और वह ऊपर हवा में उठ गई। परंतु ब्रह्मा ने फिर भी उसका पीछा नहीं छोड़ा! इस बार उनका पांचवां सिर, ऊपर की ओर प्रकट हो गया और वे निरंतर ब्राह्मी को ताकते रहे।ब्रह्मा की आसक्ति बढ़ती जा रही थी। ब्राह्मी समझ गई कि ब्रह्मा की दृष्टि से बचने के लिए उसे परमपिता से दूर जाना होगा। परंतु वह जहां भी गई, ब्रह्मा उसका पीछा करते रहे। ब्रह्मा से बचने के लिए ब्राह्मी ने पशु-पक्षियों का रूप तक धारण करके देखा। परंतु फिर भी सफलता नहीं मिली। ब्राह्मी घोड़ी बनी, तो ब्रह्मा घोड़ा बनकर आ गए, उसने गाय का रूप धरा, तो ब्रह्मा बैल बन गए। वह हिरणी में बदल गई, तो ब्रह्मा भी हिरण बन गए। इस तरह ब्राह्मी ने पशु, सरीसृप, पक्षी, कीट, स्तनधारी आदि सभी श्रेणियों में रूप धारण किए, परंतु हर बार उसने ब्रह्मा को नर रूप में अपने सामने पाया।ब्राह्मी ने इस तरह एक-एक करके सौ रूप बदले, जिसके चलते उसका नाम पड़ा- शतरूपा। अधिकतर ग्रंथों में ब्रह्मा की संतान के रूप में मनु और शतरूपा का ही नाम मिलता है। भगवान शिव ने परमपिता ब्रह्मा की ऐसी कामासक्त दशा देखी, तो उन्हें पिता के मन में पुत्री के लिए ऐसा भाव देखकर क्रोध आ गया। तब शिव ने ब्रह्मा का ऊपर निकला पांचवां सिर काट डाला, जिसके बाद ब्रह्मा के केवल चार सिर रह गए। शिव ने ब्रह्मा का सिर तो काट दिया, किंतु वह कटा सिर शिव के हाथ से चिपक गया। यह देखकर शिव चकित थे। फिर उन्हें अहसास हुआ कि ब्रह्मा का शीश काटकर उनसे ब्रह्म-हत्या का पाप हो गया, जिसके दंडस्वरूप ब्रह्मा का सिर उनके हाथ से चिपक गया था।भगवान शिव संसार-भर में घूमकर प्रयास करते रहे, किंतु उन्हें ब्रह्मा के कटे शीश से मुक्ति नहीं मिली। कुछ समय बाद, उस शीश का मांस सड़कर गिर गया और केवल हड्डियां शेष रह गईं। इस तरह शिव के हाथ में खाली कपाल रह गया। इसलिए उनका एक नाम 'कपाली' पड़ा। शिव के कुछ अनुयायी, जो कपाल लेकर घूमते हैं, 'कापालिक' कहलाते हैं। फिर एक स्थान पर पहुंचकर शिव के हाथ से कपाल स्वतः छूटकर गिर गया। भगवान समझ गए कि उन्हें ब्रह्म-हत्या के पाप से मुक्ति मिल गई है। इसी कारण वह भूमि, जहां कपाल गिरा, मोक्षदायिनी मानी जाती है और मान्यता है कि उस जगह लोगों को अपने पापों से मुक्ति मिलती है।

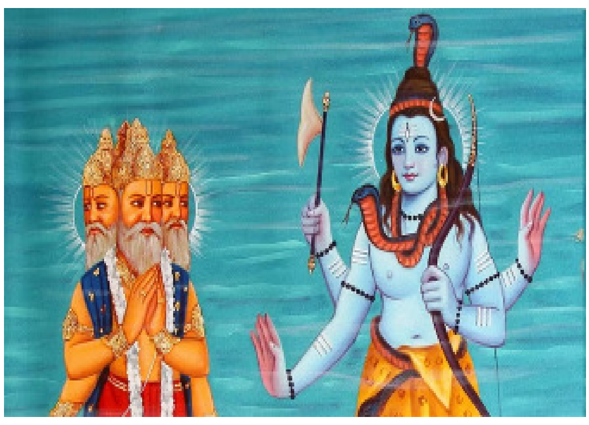

क्या फिटनेस ट्रैकर वाकई फिट बनाते हैं महत्वपूर्ण उपकरण नहीं उपहनने वाला होता है

हृदय गति में परिवर्तन से लेकर कदमों की संख्या तक के आंकड़ों का आप करेंगे क्या? महत्वपूर्ण उपकरण नहीं, बल्कि उन्हें पहनने वाला होता है।पिछले कुछ वर्षों में अपने शरीर को स्वस्थ रखना डाटा साइंस में डिग्री लेने जैसा लगने लगा है। शरीर में ग्लूकोज, पसीने, नींद, कदमों की संख्या, हृदय गति, आवाज सेंसर से संबंधित आंकड़े उपलब्ध कराने वाली घड़ियां, अंगूठियां, बाजूबंद आदि उपलब्ध हैं, जो स्वास्थ्य के बारे में जागरूक करने का वादा करते हैं।यदि आप पहनने योग्य उपकरणों का इस्तेमाल नहीं करते हैं और स्मार्टफोन रखते हैं, तो हेल्थ ऐप के जरिये आपको वही सब डाटा उपलब्ध होगा। वर्कआउट ट्रैक करना अब कोई नई बात नहीं है। अपनी फिटनेस से जुड़े आंकड़ों में दिलचस्पी पहले पेशेवर एथलीट को ही होती थी, लेकिन अब हर कोई इसे जानना चाहता है। लेकिन क्या ज्यादा आंकड़े आपको बेहतर, तेज, मजबूत और स्वस्थ मनुष्य बनाने के लिए काफी हैं? क्या ये उपकरण वाकई आपको बेहतर स्वास्थ्य और व्यायाम के लाभों को बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं? डॉक्टरों, व्यायाम विशेषज्ञों और प्रशिक्षकों का कहना है कि सभी आंकड़े अच्छे या सहायक नहीं होते हैं और अधिक डाटा होना ज्यादा स्वस्थ होने की गारंटी भी नहीं है। दरअसल, महत्वपूर्ण उपकरण नहीं, बल्कि इन्हें पहनने वाला है।हाल ही में अमेरिकी फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने उपभोक्ताओं को चेताया है कि त्वचा में छेद किए बिना ब्लड शुगर को मापने का दावा करने वाले उपकरणों का इस्तेमाल मधुमेह प्रबंधन के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

हिमाचल प्रदेश की सियासी उठापटक और राजनीतिक इतिहास के आईने में दल-बदल का समीकरण

भारत में दल बदल का इतिहास नया नहीं है। जो आजकल उठते-बैठते लोकतंत्र की दुहाई देते हैं, उन्हें स्मृति भ्रंश का रोग न होने पाए, इसलिए कुछ तथ्य पेश करने आवश्यक हैं। संविधान निर्माताओं ने तो दल-बदल रोकने के संदर्भ में किसी तरह का प्रावधान ही नहीं किया था।राज्यसभा चुनावों में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के विधायकों ने जिस अंदाज में अपनी पार्टी के व्हिप को धता बताकर अंतरात्मा की आवाज पर भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान किया, उससे दोनों 'लड़कों' के होश फाख्ता हैं। दोनों दलों के प्रवक्ता और समर्थक अब लोकतंत्र की दुहाई देकर विलाप कर रहे हैं।दरअसल, इन सब का आरोप है कि भारतीय जनता पार्टी ने सरकारी एजेंसियों के दुरुपयोग और धनबल के प्रयोग के बूते कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडी एलायंस के घटक दलों के विधायक दलों में फूट डालने का काम किया है और यह लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर बनाने की योजना के तहत है।कांग्रेस और उसके बगलबच्चा दल जब भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सहयोगी दलों के विधायकों पर डोरे डालते हैं, तब उसे वह बेहद लोकतांत्रिक होने का दावा करते हैं। इधर, अभी कुछ दिन पहले ही कांग्रेस की सहयोगी राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता ताल ठोक रहे थे कि बिहार में ऑपरेशन लालटेन होगा और भाजपा तथा जदयू के विधायक दल को तोड़ा जाएगा। अलग बात है कि जब बिहार विधानसभा में नीतीश कुमार सरकार ने विश्वास मत पेश किया तो राजद के ही विधायक पाला बदलकर नीतीश के समर्थन में खड़े हो गए, जो कांग्रेस हिमाचल प्रदेश में अपने प्रत्याशी अभिषेक मनु सिंघवी के पराभव पर चूड़ियां तोड़ रही है, वही कांग्रेस कर्नाटक में भाजपा विधायकों से क्रॉस वोटिंग कर लेने पर इतराने से बाज नहीं आती। इसी तरह उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी भी पाला बदलने वाले विधायकों को नैतिकता का पाठ पढ़ा रही है, जबकि उसने भी ओम प्रकाश राजभर के एक विधायक से जब अपने पक्ष में क्रॉस वोटिंग कराई तो उसका नैतिक बल पता नहीं कहां चला गया था?राजनीतिक इतिहास के आईने में दल-बदल समाजवादी पार्टी ने 1990 के दशक और 2003 में बड़े पैमाने पर बहुजन समाज पार्टी के विधायकों से दल बदल कराया था, तब उनकी नैतिकता कहां खो गई थी? कांग्रेस ने विगत् विधानसभा में ही राजस्थान में बसपा के सभी विधायकों को तोड़ लिया था, तब लोकतंत्र की दुहाई उसने बिसार दी थी।दरअसल लोकतंत्र की परिभाषा को तमाम कांग्रेसी बगलबच्चों ने अपनी सुविधा के अनुसार परिवर्तित करने का शगल शुरू से ही पाल रखा है।भारत में दल बदल का इतिहास नया नहीं है। जो आजकल उठते-बैठते लोकतंत्र की दुहाई देते हैं, उन्हें स्मृति भ्रंश का रोग न होने पाए, इसलिए कुछ तथ्य पेश करने आवश्यक हैं। संविधान निर्माताओं ने तो दल-बदल रोकने के संदर्भ में किसी तरह का प्रावधान ही नहीं किया था।भारत के संविधान पर वेस्टमिंस्टर प्रणाली का प्रभाव है जिसमें विधायिका के सदस्यों से अपनी लोकतांत्रिक चेतना के आधार पर निणर्य की स्वतंत्रता परिकल्पित रही है। 1951 से लेकर 1967 तक विविध दलों से कुल 542 विधायकों ने अपने दल से पाला बदलकर कांग्रेस में प्रवेश किया, तब तक सब कुछ चंगा था और इस प्रक्रिया को लोकतांत्रिक चोला भी पहनाया गया था। 1967 में संविद (संयुक्त विधायक दल) सरकार की सफलता के बाद बड़े पैमाने पर कांग्रेस छोड़कर विधायक विरोधी दलों में शामिल होने लगे, तब कांग्रेस सरकार ने यशवंत राव चव्हाण के नेतृत्व में दल बदल के बारे में एक समिति का गठन किया।इस समिति का गठन लोकसभा में दल-बदल के संदर्भ में पारित एक प्रस्ताव के चलते हुआ। फरवरी 1967 से मार्च 1968 के बीच 12 महीने की समयावधि में कुल 438 विधायकों ने दल बदल कर लिया। तब कांग्रेस की आंखें चौंधियाई। यशवंत राव चव्हाण समिति की रिपोर्ट में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भूपेश गुप्ता ने जो नोट लिखा है, वह कांग्रेस की अवसरवादी राजनीति को अच्छे से बेनकाब करता है। 1967 तक जो दल-बदल हो रहे थे, इसका लाभ कांग्रेस को मिल रहा था। किंतु चौथे आम चुनाव के बाद विविध राज्यों में कांग्रेस की पराजय के बाद दल-बदल कर कांग्रेसी विधायक विपक्षियों के साथ सरकार बनाने लगे। 1967 के बाद जिन विधायकों ने पाला बदला था, उनमें सात राज्यों के 210 विधायक शामिल थे, जिनमें से 116 मंत्री बन गए थे। संकेत साफ था कि सरकार बनाने के लिए मंत्री पद का लोभ विधायकों को पाला बदलने के लिए प्रेरित कर रहा था। 1970 के दशक में पहले कांग्रेस ने और बाद में जनता पार्टी की सरकार ने पहली बार दल-बदल प्रतिबंधक कानून बनाने पर विचार करना प्रारंभ किया। हालांकि, 1979 में कांग्रेस ने जनता पार्टी में फूट डालकर मोरारजी देसाई की सरकार गिरा दी। चौधरी चरण सिंह को कुछ काल के लिए प्रधानमंत्री पद से पहले नवाजा और फिर उनकी सरकार से समर्थन वापस खींचकर उन्हें अपदस्थ कर दिया।अब किसी भी विधानसभा या लोकसभा में विधायक दल या संसदीय दल में विभाजन के लिए एक तिहाई सदस्यों का साथ आना आवश्यक था। इसके बाद भी राजीव गांधी ने स्वयं विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार और चंद्रशेखर की सरकार को गिराने का खेल खेला। तमिलनाडु की विधानसभा में एक तिहाई विधायक दल के नियम की धज्जी स्वयं विधानसभा अध्यक्ष ने 1987 में उड़ाई। जो शरद पवार इन दिनों दो-तिहाई विधायक दल के अजीत पवार के साथ जाने के बावजूद महाराष्ट्र के विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर के फैसले को अलोकतांत्रिक करार दे रहे हैं, वही 1991 में एक तिहाई की तुलना में कम विधायक होने के बावजूद शिवसेना से अलग हुए छगन भुजबल के नेतृत्व वाले 12 विधायकों को तत्कालीन महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष मधुकर राव चौधरी के फैसले को संविधान के अनुकूल बता रहे थे। तमाम विधानसभाओं के ऐसे दर्जनों मामले हैं जिसमें विविध विधानसभाओं के विविध अध्यक्षों ने एक तिहाई और दो तिहाई के मानक की धज्जियां उड़ाई हैं।अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने अलग विधायक दल के लिए दो तिहाई का मानक तय किया। बावजूद इसके ऐसे तमाम उदाहरण हैं जिसमें विधायक दल की तोड़फोड़ को संविधान सम्मत ठहराया गया। अब कांग्रेस और उसके बगलबच्चा दल आए दिन गच्चा खा रहे हैं, इसलिए उनके लोकतंत्र और संविधान की परिभाषा आजकल बदली-बदली नजर आ रही है।

कोयले का सनसनीखेज अतीत, जिसने भूगोल के साथ इतिहास को भी किया प्रभावित

तत्कालीन सोवियत संघ में बसी हुई थी कोयले की वह कहानी, जिसने उसके इतिहास और भूगोल, दोनों को प्रभावित किया। वही कोयला जो कभी स्टालिन की ताकत था, सोवियत रूस के विघटन की वजह बन गया। रूस-यूक्रेन युद्ध की तीसरी बरसी पर हम देख सकते हैं कि कभी ऊर्जा के पावर हाउस रहे रूस से दुनिया का कारोबार बंद है।यूरोप ने कभी नहीं सोचा था कि दुनिया के सबसे बड़े कोयला क्षेत्रों, यानी रूस के कुजनेत्स और यूक्रेन के डोनेस्क का पड़ोसी होने के बावजूद उन्हें अटलांटिक पार अमेरिका से कोयला मंगाना पड़ेगा। रूस को भी अनुमान नहीं था कि कोयले की, जो उसके औद्योगिक इतिहास का सबसे बड़ा निर्माता है, खदानों में सननटा छा जाएगा। इधर यूक्रेन को भी कहां अनुमान था कि हमलों के बीच उसे अपनी बंद पड़ी खदानों के भीतर से कोयला निकाल कर बिजली बनानी पड़ेगी। यह वही कोयला है, जिसने यूक्रेन के डोनबास इलाके में इतिहास बनाया था। कोयले के कारण ही पूरा कम्युनिस्ट पूर्वी यूरोप बिखर गया। इसी कोयले की वजह से वर्ष 1991 में मिखाइल गोर्बाचेव की विदाई हुई थी।रूस वाले कोयले का अतीत है ही इतना सनसनीखेजतो आइए टाइम मशीन में कुर्सी पकड़िए। चलते हैं इतिहास की यात्रा पर। सोशल मीडिया पर रातों-रात स्टार बन जाने वाले अनजान गुमनाम लोगों के दौर से पीछे जाते हुए मशहूर टाइम मैगजीन के मुखपृष्ठ पर एक तस्वीर देखकर आश्चर्य होगा। हम अब 1935 में हैं और आपके हाथ में है टाइम मैगजीन। इसके कवर पर अलेक्सी स्टैकनोव की तस्वीर है। अलेक्सी स्टैकनोव कोई नेता, अभिनेता, वैज्ञानिक या समाजसेवी नहीं हैं। तीस साल के स्टैकनोव रूस की एक कोयला खदान में मजदूर हैं।कोयले के खनन में उनके एक चमत्कार ने उन्हें रातों-रात स्टार बना दिया। स्टैकनोव ने तीन लोगों की एक छोटी-सी टीम के साथ कोयला निकालने और उसे ऊपर तक ले जाने का तरीका बदला। और छह घंटे की शिफ्ट में 102 टन कोयले का उत्पादन कर दिया। स्टैकनोव हीरो हो गए। कम्युनिस्ट पार्टी को नया ब्रांड एंबेसडर मिल गया।अब चलते हैं मास्को। दौर है 1936 का। यहां जोसेफ स्टालिन मजदूरों की एक बड़ी कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रहे हैं। कॉन्फ्रेंस में आए मजदूरों को स्टैकनोवाइट्स कहा जा रहा है। यानी वे श्रमिक, जो अपनी मेहनत से खुश और सुखी हैं। स्टालिन कह रहे हैं, 'लाइफ हैज बिकम हैपियर कामरेड्स, लाइफ हैज बिकम हैपियर...' यही वह संदेश था, जिस पर संगीत व गीत बनाए गए। हालांकि बाद के दशकों में स्टालिन का यह संदेश व्यंग्य बन गया।कम्युनिस्टों के स्टार मजदूर स्टैकनोव रूस और यूक्रेन के सीमावर्ती इलाके डोनबास से आते हैं, जिसे डोनेट्स रीजन कहा जाता है। इसका एक हिस्सा रूस में और दूसरा यूक्रेन के पास था, जिसे पुतिन के ताजा हमले ने स्वायत्त क्षेत्र में बदल दिया है। डोनबास यूक्रेन का सबसे विकसित शहरी इलाका है। 2014 में रूस से संघर्ष की शुरुआत से पहले यहां का समृद्ध कोयला और खनन उद्योग यूक्रेन की अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत था।इस सफर के लिए टाइम मशीन में बैठने से पहले आप भी खारकीव, डोनेस्क जैसे शहरों के नाम सुन चुके होंगे। मारियोपोल का बंदरगाह शहर, जिस पर रूस ने मौत बरसाई है, भी इसी समृद्ध कोयला और औद्योगिक क्षेत्र का हिस्सा है। टाइम मशीन अब तेजी से उड़ान भर कर 18वीं सदी के ब्रिटेन में आ गई है। यह ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति, नई फैक्टरियों और बढ़ते कामगारों का दौर है। अब आप वेल्स के मिथाइल टैडफिल शहर में हैं, जहां शुरुआती लोहा उद्योग विकसित हुआ था। यहां आपको जॉन ह्यूज के किस्से सुनने को मिलेंगे। वह एक लोहा मिल में इंजीनियर के बेटे थे। किस्मत और नसीहतों की चक्करदार सीढ़ियां चढ़ते हुए ह्यूज पहुंच गए मिलवाल आयरन ऐंड शिपबिल्डिंग वर्क्स, जो तब सबसे बड़ी लोहा कंपनी थी। ह्यूज को इस कंपनी का निदेशक बनाया गया और वह निकल पड़े कोयले की तलाश में।टाइम मशीन में आपको दिखाई देगा कि 1869 में ह्यूज करीब आठ जहाजों पर साजो-सामान और मजदूरों के साथ यूक्रेन पहुंच गए हैं, जहां लोहा भी है और कोयला भी। डोनेट्स के इस वीरान इलाके में उद्योग नाम की चीज नहीं थी। ह्यूज ने यहां एक मेटलर्जिकल और रेल पटरी बनाने की फैक्टरी लगाई। काला सागर करीब ही था, जिससे तैयार माल ब्रिटेन पहुंचने लगा। यह बोल्शेविक युग से पहले की बात है, जब आपको दिखेगा कि जॉन ह्यूज रूस के औद्योगिकीकरण के प्रवर्तक बन गए हैं। डोनबास के इलाके में मजदूर जुटने लगे हैं। कोयला और लोहा उद्योग चमक रहा है। जॉन ह्यूज ने यहां एक शहर बसाया, जिसे युजकोवा नाम दिया गया था। इस शहर में मजदूरों को ब्रिटेन की तर्ज पर अच्छे अस्पताल, स्कूल आदि की सुविधाएं दी गईं।टाइम मशीन अब आपको बोल्शेविक क्रांति के बीचों-बीच ले आई, जिसके असर से ह्यूज की कंपनी के विदेशी कर्मचारियों और मालिकों को देश छोड़ना पड़ा, लेकिन उद्योग फलता-फूलता रहा। युजकोवा शहर का नाम बदल कर सिटी स्टालिनो कर दिया गया। टाइम मैगजीन के कवर पर विराजने वाले मजदूर स्टैकनोव ने इस इलाके को दुनिया में मशहूर कर दिया। टाइम मशीन में स्टैकनोव का किस्सा सुनते हुए हम आ गए हैं 1985 मे। ठीक पहचाना आपने, ये मिखाइल गोर्बाचेव हैं, जो हैं रूस के पेरोस्त्रोइका यानी नए आर्थिक सुधार के प्रवर्तक। गोर्बाचेव ने ग्लासनोस्त और डेमोक्रैत्जिया के जरिये उदारीकरण और लोकतंत्र को बढ़ावा दिया था।गोर्बाचेव के सुधारों के बीच इधर रूस के कोयला खनन इलाकों में हालत बिगड़ने लगे। 1958 के बाद से तेल व गैस पर निवेश बढ़ा, जिससे कोयला उद्योग पिछड़ने लगा। इस बीच सोवियत रूस की कुख्यात महंगाई मजदूरों का दम निकालने लगी। टाइम मशीन की खिड़की से आप देख सकते हैं, खदानों में दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। कोयला मजदूर अब हड़ताल पर हैं। पहली बड़ी हड़ताल 1989 में साइबेरिया के कुजबास इलाके में हुई। यह बगावत दो साल में डोनबास तक फैल गई।यह क्या? कुछ दिखा आपको? कोयला मजदूरों को कौन संबोधित कर रहा है? जी हां, यह बोरिस येल्तसिन हैं। दरअसल, 1991 में यूक्रेन के डोनेट्स इलाके में एक खान में आग लगी। 31 मजदूर मारे गए। इसके बाद यह आंदोलन बुरी तरह भड़क उठा। रूस के ऊपर से उड़ते हुए आपको दिखेगा कि डोनेक्स से साइबेरिया तक करीब तीन लाख मजदूरों ने रूस की एक-तिहाई कोयला खदानें बंद कर दी हैं। अब गोर्बाचेव को सुधार वापस लेने पड़े। येल्तसिन ने सोवियत रूस के गणतंत्र के साथ नए समझौते का दबाव बनाया। इस बीच सोवियत रूस बिखर गया। कम्युनिस्टों के गढ़ पूर्वी यूरोप का नक्शा ही बदल गया। वही कोयला, जो कभी स्टालिन की ताकत था, सोवियत रूस के विघटन की वजह बन गया। टाइम मशीन अब रूस-यूक्रेन युद्ध की तीसरी बरसी पर मास्को में उतर रही है। ऊर्जा स्रोतों के पावर हाउस और निर्यातक रूस से दुनिया का कारोबार बंद है।

क्या गरीब लुप्त होती प्रजाति है नीति आयोग की चाहत और सरकार की कोशिश

यह कहकर कि देश में गरीब आबादी केवल पांच फीसदी रह गई है, नीति आयोग को गरीबों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। सरकार गरीबी भले दूर करने में सफल न हो पा रही हो, लेकिन गरीबों को अपनी नजरों से ओझल करने की पुरजोर कोशिश जरूर कर रही है।अगर आप किसी सुबह उठें और अखबार में एक हेडलाइन पढ़ें कि 'कोई गरीब नहीं, भारत ने किया गरीबी का उन्मूलन', तो हैरत नहीं होनी चाहिए। नीति आयोग दरअसल यही चाहता है कि आप इस पर भरोसा करें। योजना आयोग जैसी प्रतिष्ठित संस्था को सरकार का प्रवक्ता बना कर रख दिया गया है। पहले उसने घोषणा की कि देश में बहुआयामी गरीबी 11.28 फीसदी है और अब इसके सीईओ ने यह खोज की है कि भारत में गरीब आबादी पांच फीसद से ज्यादा नहीं है। सीईओ ने यह आश्चर्यजनक दावा राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय द्वारा प्रकाशित घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (एचसीईएस) के निष्कर्षों के आधार पर किया है। एचसीईएस के निष्कर्ष कितने ही आश्चर्यजनक क्यों न हों, लेकिन उनसे ये कहीं से प्रकट नहीं होता कि भारत में गरीबों का अनुपात पांच फीसदी से ज्यादा नहीं है।एचसीईएस का सर्वे अगस्त, 2022 से जुलाई, 2023 के बीच किया गया था। इसने 8,723 गांवों और 6,115 शहरी ब्लॉकों से 2,61,745 घरों (ग्रामीण क्षेत्रों में 60 और शहरी क्षेत्रों में 40 फीसदी) को कवर किया। हम यह भी मान लेते हैं कि नमूना पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्वपूर्ण था और सर्वे की कार्यप्रणाली भी बिल्कुल सटीक थी। इसका उद्देश्य वर्तमान/नॉमिनल कीमतों पर मासिक प्रति व्यक्ति व्यय (एमपीसीई) की गणना करना था। औसत के रूप में देखें तो एक व्यक्ति का मासिक व्यय था -अब जरा नीचे के 20 फीसदी पर नजर डालते हैं। क्या नीति आयोग गंभीरता से तर्क देता है कि कोई भी व्यक्ति, जिसका मासिक खर्च (भोजन और गैर-खाद्य) ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 2,112 रुपये या 70 रुपये प्रतिदिन है, वह गरीब नहीं है? या शहरी क्षेत्रों में कोई भी व्यक्ति, जिसका मासिक खर्च 3,157 रुपये या प्रतिदिन 100 रुपये है, गरीब नहीं है? मेरा सुझाव है कि सरकार नीति आयोग के प्रत्येक अधिकारी को 2,100 रुपये देकर एक महीने गांवों में जाकर रहने के लिए भेजे और फिर यह बताने के लिए कहे कि उसका जीवन कितना समृद्ध था।जो वास्तविकताएं सामने आईएचसीईएस ने खुलासा किया कि उपभोग में भोजन की हिस्सेदारी ग्रामीण क्षेत्रों में घटकर 46 और शहरी क्षेत्रों में 39 फीसदी हो गई है। यह शायद सच है, क्योंकि आय व व्यय तो बढ़ रहा है, लेकिन खाद्य उपभोग का मूल्य वही बना हुआ है या बेहद धीमी गति से बढ़ रहा है। बाकी आंकड़े भी वास्तविकता की कुछ और ही तस्वीर दिखाते हैं। अनुसूचित जाति व जनजातियां सबसे गरीब सामाजिक समूह बने हुए हैं। वे औसत से नीचे, तो ओबीसी औसत के करीब हैं। केवल 'अन्य' हैं, जो औसत के ऊपर हैं। राज्यवार आंकड़ों को देखें, तो सबसे गरीब नागरिक वे हैं, जो छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और मेघालय में रहते हैं, जिनका एमपीसीई ग्रामीण क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय औसत से नीचे है। अगर हम शहरी क्षेत्रों के लिए एमपीसीई के राष्ट्रीय औसत पर विचार करें, तो राज्यों के नामों में थोड़ा ही फर्क पाएंगे। इन राज्यों में लंबे समय तक भाजपा और गैर-कांग्रेसी सरकारों का शासन रहा है। फिजूल प्रचार पर न जाएं, तो हैरत की बात है कि 1995 से भाजपा द्वारा शासित गुजरात एमपीसीई के मामले में ग्रामीण और शहरी, दोनोंक्षेत्रोंमें राष्ट्रीय औसत को लगभग ही गले लगा पाता है।

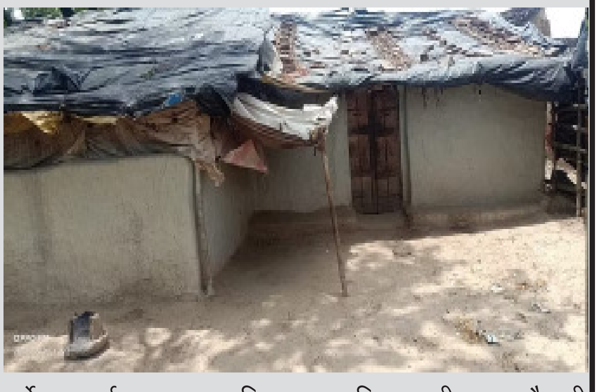

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान में आसमान से बरस रही आफत भारी बारिश से 37 लोगों की मौत

पेशावर। ठंड के मौसम के साथ पाकिस्तान में भारी बारिश हो रही है। पाकिस्तान में लगातार बारिश के बाद कई इलाकों में बाढ़ जैसी हालात हो गई है। लगातार बारिश की वजह से अबतक 35 से ज्यादा लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। पाकिस्तान में पिछले 48 घंटों में बारिश संबंधी घटनाओं में कम से कम 37 लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। पिछले 2 दिनों से पाकिस्तान में लगातार बारिश जारी है।भारी बारिश की वजह से अबतक 37 लोगों की मौत हो चुकी है। लगातार बारिश की वजह से कई इलाकों में बाढ़ जैसे हालात हैं।प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने कहा कि गुरुवार रात से अफगानिस्तान की सीमा से लगे खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में बारिश से संबंधित घटनाओं में कम से कम 27 लोगों की मौत हो गई जिनमें ज्यादातर बच्चे हैं। अधिकारियों ने जानकारी देते हुए कहा कि पूरे पाकिस्तान में हुई बारिश के कारण कई घर ढह गए और कई इलाकों में भूस्खलन हुआ, जिससे सड़कें अवरुद्ध हो गईं। यह भूस्खलन खासकर उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा (केपीके) प्रांत में हुआ है। प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने कहा कि गुरुवार रात से अफगानिस्तान की सीमा से लगे खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में बारिश से संबंधित घटनाओं में कम से कम 27 लोगों की मौत हो गई, जिनमें ज्यादातर बच्चे हैं। बताया गया कि पिछले 48 घंटों में खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के बाजौर, स्वात, निचले दीर, मलकंद, खैबर, पेशावर, उत्तर, दक्षिण वजीरिस्तान और लक्की मारवात सहित दस जिलों में हुई मूसलाधार बारिश में 37 लोग घायल हो गए हैं। मुख्यमंत्री केपीके अली अमीन गंडापुर ने कहा कि बारिश से प्रभावित लोगों को इस महत्वपूर्ण घड़ी में अकेला नहीं छोड़ा जाएगा और उनके नुकसान के लिए उचित मुआवजा दिया जाएगा। दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान प्रांत में बाढ़ के कारण तटीय शहर ग्वादर में पानी भर जाने से कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई, जिससे अधिकारियों को लोगों को निकालने के लिए नावों का इस्तेमाल करना पड़ा।

शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया जाये-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में तहसील लालगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। लालगंज तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 102 फरियादी अपनी समस्याओं के निस्तारण हेतु उपस्थित हुये जिनमें से 07 शिकायतें इस प्रकृति की पायी गयी जिनका मौके पर निस्तारण कर दिया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल प्राप्त 102 शिकायतों में से 32 शिकायतें राजस्व विभाग से, पुलिस विभाग से 25, विकास विभाग से 16, विद्युत से 08 एवं 21 अन्य विभागों से सम्बन्धित शिकायते प्राप्त हुई। विकास विभाग से सम्बन्धित शिकायतों को मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहारा द्वारा सुना गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में शिकायतकर्ता रवीन्द्र मिश्रा निवासी वार्ड नं0-8 मनीपुर नगर पंचायत लालगंज ने शिकायत किया कि वार्ड नं0-8 में 2 वर्षो से इण्डिया मार्का नल हैण्डपम्प खराब पड़ा है, कई बार सम्बन्धित नगर पंचायत में प्रार्थना पत्र भी दिया लेकिन कोई सुनवाई नही हो रही है जिस पर जिलाधिकारी ने नगर पंचायत लालगंज के अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किया कि जांच कर आवश्यक कार्यवाही करें। शिकायतकर्ता सुन्दरी मिश्रा पतनी स्व0 राम भरोस निवासी सांगीपुर ने शिकायत किया कि दुर्घटना के कारण प्रार्थिनी के पति की मृत्यु हो गयी थी और परिवार का वह अकेला कमाउ व्यक्ति था, प्रार्थिनी ने सहायता/मुख्यमंत्री कृषि दुर्घटना कल्याण योजना का लाभ लेने हेतु उपजिलाधिकारी लालगंज कार्यालय में आवेदन किया था लेकिन अभी तक लाभ नही मिल पाया गया है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने मुख्य राजस्व अधिकारी को आवश्यक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया। इसी प्रकार शिकायतकर्ता इलियास निवासी गावी महुआवन ने शिकायत किया कि प्रार्थी के भूमि गाटा संख्या में बन रहे अवैध चकमार्ग को रोके जाने के सम्बन्ध में शिकायत की जिस पर जिलाधिकारी ने तहसीलदार को निर्देशित किया कि प्रकरण की जांच कर प्रार्थी की समस्या का समाधान करायें। इसी प्रकार सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी ने जन शिकायतों को गम्भीरता पूर्वक सुनकर उसका निस्तारण सम्बन्धित अधिकारियों को ससमय गुणवत्तापूर्ण ढंग से कराने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में अधिकारियों, लेखपालों एवं कानूनगो को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया कि शासन की मंशा अनुरूप शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया जाये एवं शिकायतकर्ता को पूर्णरूप से संतुष्ट किया जाये। उन्होने राजस्व प्रकरणों के सम्बन्ध में निर्देशित किया कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम जाकर निष्पक्ष जांच कर शिकायतकर्ता की शिकायत का निस्तारण करायें, इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही एवं उदासीनता कदापि न बरती जाये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी ने सभी विभागीय अधिकारियों को सख्त निर्देश दिये कि कार्यो में ढिलाई कदापि न बरती जाये, कोई भी गरीब व्यक्ति किसी कल्याणकारी योजनाओं से वंचित न रहने पाये। उन्होने कहा कि सभी अधिकारीगण अपने-अपने दायित्वों को समझे और उसका शत् प्रतिशत निर्वहन करें जिससे आमजन मानस की समस्याओं का निराकरण किया जा सके, अधिकारीगण अपने अधीनस्थों पर निर्भर न रहें बल्कि स्वयं निस्तारण की गुणवत्ता को देखें इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहारा, जिला विकास अधिकारी राकेश प्रसाद, परियोजना निदेशक डीआरडीए डा0 आर0सी0 शर्मा, पुलिस विभाग के अधिकारी व जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

खैबर पख्तूनख्वा विधानसभा में महिला विधायक पर फेंका गया जूता और लोटा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में एक महिला विधायक पर जूते से हमला किया गया है। नवाज शरीफ की पार्टी मुस्लिम लीग-नवाज ने पुलिस को शिकायत कर पीटीआई कार्यकर्ताओं पर जूता और लोटा फेंकने के आरोप में एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। खैबर पख्तूनख्वा विधानसभा में महिला विधायक सोबिया शाहिद पर हमला हुआ है। पीएमएल-एन के प्रांतीय अध्यक्ष अमीर मुकाम ने कहा कि घटना में शामिल पीटीआई कार्यकर्ताओं ने भी नारे लगाए और महिला विधायक के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया। नवाज शरीफ की पार्टी ने पुलिस को शिकायत कर पीटीआई कार्यकर्ताओं पर एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। पाकिस्तान स्थित डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, 20 फरवरी को खैबर पख्तूनख्वा विधानसभा में महिला विधायक सोबिया शाहिद पर हमला हुआ है। पीएमएल-एन के प्रांतीय अध्यक्ष अमीर मुकाम ने कहा कि घटना में शामिल पीटीआई कार्यकर्ताओं ने भी नारे लगाए और महिला विधायक के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया।

श्री शिव महापुराण में मौजूद है हर समस्या का समाधान - सद्गुरूनाथ जी महाराज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नोएडा। राष्ट्र की समृद्धि, शांति एवं विकास के लिए नोएडा सेक्टर 110 स्थित राम लीला मैदान, महर्षि नगर में आयोजित श्री शिव महापुराण कथा के तीसरे दिन परम पूज्य सद्गुरूनाथ महाराज जी भक्तों को कथा सुनाते हुए कहा कि कलिकाल में लोग इतनी अधिक समस्याओं से ग्रसित होते जा रहे हैं, जिसे भगवान शिव की भक्ति के द्वारा ही मुक्ति मिल सकती है। इस संसार के शिव ही तारणहार है।मीडिया प्रभारी ए के लाल ने बताया की शिवरात्रि का पावन पर्व जल्द ही आने वाला है सभी लोग पूर्ण निष्ठा से भगवान का अभिषेक एवं पूजा-अर्चना करें और अनेक समस्यायों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें। जब जीवन में विपत्ति आती है तो सारी दुनिया साथ छोड़ देती है लेकिन भोलेनाथ अपने भक्तों को कभी अकेला नहीं छोड़ते। मृत्यु शैया पर भी जो व्यक्ति पड़ा हो, उसकी सलामती के लिए अगर महामृत्युंजय का जाप सही विधि से किया जाए तो वह भी ठीक हो सकता है। ऐसे चमत्कारिक देव है महादेव। बस जरूरत है इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास की। श्री शिव महापुराण कथाक्रम को आगे बढ़ाते हुए सद्गुरूनाथ जी महाराज ने कहा कि पुराणों में रुद्राक्ष को देवों के देव भगवान शिव का स्वरूप ही माना गया है। पौराणिक कथा के अनुसार रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रु से हुई है। रुद्राक्ष पहनने से इंसान की मानसिक और शारीरिक परेशानियां दूर होती हैं। जो इसे धारण कर भोलेनाथ की पूजा करता है उसे जीवन के अनंत सुखों की प्राप्ति होती है। सद्गुरूनाथ जी महाराज बेलपत्र के गुणों को बताते हुए कहा कि शिव भगवान को दूध और बेलपत्र दोनों बहुत पसंद है। बेलपत्र को ऊपर की जेब में रखने से दिल में रक्तप्रवाह ठीक बना रहता है। आगे उन्होंने कहा कि श्री शिव महापुराण में चौबीस हजार श्लोक हैं उनमें से एक श्लोक ही नहीं बल्कि एक शब्द मात्र को भी अपने जीवन मे धारण करने से इस मानव शरीर की शुद्धि होती है। उन्होंने कहा हमें मनुष्य का शरीर तो मिल गया लेकिन हमने इसके महत्व को नहीं समझा तो सब बेकार है। मानव शरीर का महत्व भगवान की भक्ति में है। कथा के दौरान सद्गुरूनाथ जी महाराज ने कहा कि जीवन में जितने दुख आते हैं वह कर्मो से आते हैं। भारत देवभूमि व कर्मभूमि है। यहां पर मनुष्य जैसा कर्म करेगा, उसको उसी के अनुसार फल की प्राप्ति होगी। शुभ सोच का फल पुण्य व गलत कृत्य का फल पाप के रूप में मिलता है। संत वही है जो बुराइयों को सहने के बावजूद भी मानव कल्याण का हित सोचता है। उन्होंने कहा कि राजा दक्ष ने पुत्री के प्रति सन्हे के बजाय द्वेष किया। इसलिए यज्ञ सत्कर्म करने पर भी उन्हें दुख का सामना करना पड़ा। बेटी का अपमान करने पर देवता भी सहायता नहीं करते। जप करो, तप करो, तीर्थ करो हज़ार। मात-पिता की सेवा बिनु, सब कुछ है बेकार।। यानि कोई चाहे भगवान की कितनी ही भक्ति कर ले, तपस्या करे, तीर्थ यात्रा करे, लेकिन यदि घर मे माता-पिता दुखी हैं, उनका आदर सम्मान नही हो रहा है तो ये सब निष्फल ही रहता है। ऐसी पूजा सेवा को भगवान भी स्वीकार नही करते। सद्गुरूनाथ जी महाराज ने बताया कि बचपन से ही बच्चे में अच्छे गुण विकसित करने चाहिए। बच्चा जितना संस्कारी होगा उसके विचार उतने ही सुंदर और मनमोहक होंगे। जिंदगी में वो जरूर कुछ ऐसा करेगा कि पूरे परिवार का नाम रौशन होगा। हमेशा परिवार में पूजा-अर्चना होनी चाहिए। अगर भगवान ने आपको कुछ दान देने वाला बनाया है तो भगवान का शुक्रिया अदा कीजिए। अच्छे कामों में दान-दक्षिणा दीजिए। जिससे आपके पितर भी खुश होंगे और आपके घर धनवर्षा होगी। सदा परिवार में खुशियां व्याप्त होंगी। श्री शिव महापुराण कथा के पावन अवसर के दूसरे दिन श्री अजय प्रकाश श्रीवास्तव, अध्यक्ष, महर्षि महेश योगी संस्थान और कुलाधिपति, महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ इन्फार्मेशन टेकनलोजी, श्री राहुल भारद्वाज, उपाध्यक्ष, महर्षि महेश योगी संस्थान और श्री शिव महापुराण कथा कार्यक्रम के संयोजक रामेन्द्र सचान और गिरीश अगिन्होत्री एवं प्रबंध समिति के सभी सदस्य व महर्षि संस्थान के वरिष्ठ सदस्यों सहित हजारों भक्त उपस्थित थे।

जल शक्ति मंत्रालय ने शुरू की स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग पहल, लोकप्रिय स्थलों पर सौंदर्य और स्वच्छता मानकों को बढ़ाने है मकसद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। केंद्र ने भारत के पर्यटन क्षेत्र में स्वच्छता प्रथाओं को बढ़ाने के प्रयासों के तहत लोकप्रिय स्थलों पर सौंदर्य और स्वच्छता मानकों को बढ़ाने के लिए स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग नामक पहल शुरू की है। यह जानकारी केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने दी केंद्र ने भारत के पर्यटन क्षेत्र में स्वच्छता प्रथाओं को बढ़ाने के प्रयासों के तहत लोकप्रिय स्थलों पर सौंदर्य और स्वच्छता मानकों को बढ़ाने के लिए स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग नामक पहल शुरू की है। यह जानकारी केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने दी। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय के तहत पेयजल और स्वच्छता विभाग ने केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय के साथ मिलकर इस अवधारणा को पेश किया है। द्रीय जल शक्ति मंत्रालय के तहत पेयजल और स्वच्छता विभाग ने केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय के साथ मिलकर इस अवधारणा को पेश किया है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर सौंदर्य और स्वच्छता मानकों को बढ़ाने के लिए पर्यटकों के लिए विश्व स्तरीय स्वच्छता युक्त सुविधाएं प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया।शेखावत ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि हमारे देश के आतिथ्य और विकास के राजदूत के रूप में हमारी सभी पर्यटक सुविधाओं को हमारे पर्यटन स्थलों के सौंदर्य और स्वच्छता स्तर को बढ़ाने में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में नर्मदापुरम के मध्य मढ़ई में स्थित बाइसन रिसा?ट्र्स ने पहले पांच स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग प्रमाणपत्र प्राप्त कर अग्रणी स्थान हासिल किया है। यह सम्मान जिम्मेदार पर्यटन प्रथाओं के प्रति रिसार्ट की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

पूर्वांचल नव निर्माण मंच की समीक्षा बैठक में सिंचाई, पेयजल शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली बिल का उठा मामला

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। अलग पूर्वांचल राज्य स्थापना की मांग कर रहे सामाजिक संगठन पूर्वांचल नव निर्माण मंच की समीक्षा बैठक रविवार को सिंचाई डाक बंगले पर संपनन्हुई। पूर्वांचल नव निर्माण मंच के जिलाध्यक्ष सुमित मिश्रा (शनि) के नेतृत्व में वाराणसी से आये पूर्वांचल नव निर्माण मंच के राष्ट्रीय महासचिव विजयानंद मिश्रा जी का नगर में जोरदार स्वागत किया गया। सिंचाई डाक बंगले पर स्थापित चौधरी चरण सिंह जी की प्रतिमा को माल्यार्पण करते हुए राष्ट्रीय महासचिव विजयानंद मिश्रा जी ने संगठन की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता किया। बैठक में जिलाध्यक्ष सुमित मिश्रा ने नगवां व घोरावल विकास खंड के किसानों के लिए सिंचाई तथा पेयजल आपूर्ति की ज्वलंत समस्या पर चर्चा करते हुए बताया कि सैकड़ों गांव असिंचित हैं, जहां लोगों को पेयजल के लिए भी साल के छः महीने संघर्ष करना पड़ता है। यही कारण है कि कृषि भूमि होने के बावजूद ज्यादातर किसान आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हो पा रहे हैं और अशुद्ध जल पीकर गंभीर बिमारी का शिकार हो रहे हैं। सुमित मिश्रा ने बिजली बिल में आयी छूट का मुद्दा भी उठाया और बताया कि जब सरकार छूट दे रही थी तब ज्यादातर किसानों का धान बिक्री नहीं हो सका था। यदि बिक भी गया था तो भुगतना नहीं मिला था, जिसके कारण ज्यादातर किसानों को छूट का लाभ नहीं मिल सका। पूर्वांचल नव निर्माण मंच के छात्र नेता अभय पटेल ने सोनभद्र में शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था का मुद्दा उठाते हुए बताया कि जनपद के पहाड़ी इलाकों में दर्जनों गांवों में सरकार ने अस्पताल तो बना दिया है और वहां बाकायदा डाक्टरों की नियुक्ति भी कर दी गई है। लेकिन धरातल पर स्थिती कागजों से विपरीत है। गांवों के अस्पतालों पर तैनात डाक्टर अस्पताल पर नहीं जाते हैं। संविदा पर तैनात कंपाउंडर वगैरह ही गांव में अस्पताल चला रहे हैं। अभय पटेल ने यह भी दावा किया कि नगवां चतरा, घोरावल, चोपन, कोन आदि विकास खंडों को दुरस्थ गांवों के विद्यालयों पर शिक्षकों की अनुपस्थिति का भी दावा किया । अभय पटेल ने दावा किया कि शिक्षकों और डाक्टरों की अनुपस्थिति के कारण शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था का स्तर लगातार गिरता जा रहा है ग्रामीण क्षेत्रों में। बैठक में उठे मामलों को गंभीरता से सुनते हुए मंच के महासचिव विजयानंद मिश्रा ने कहा कि किसानों के लिए सिंचाई हेतु यथासंभव लिफ्ट, तथा बांध बनवाने हेतु जिम्मेदार विभाग को लिखा जायेगा। साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य की जिम्मेदारी निभाने के लिए तैनात डाक्टरों और अध्यापकों को चिंहित करते हुए सरकार को कारवाई हेतु लिखा जायेगा। विजयानंद मिश्रा ने कहा कि जनहित में पूर्वांचल नव निर्माण मंच सदैव संघर्ष करता रहा है आगे भी संघर्ष जारी रहेगा। बैठक में संगठन के विस्तार पर भी चर्चा की गई, आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर भी मंच के समर्थन को लेकर मंत्रणा हुई। राष्ट्रीय लोक दल के जिलाध्यक्ष राम सेवक पटेल ने भी पूर्वांचल नव निर्माण मंच के राष्ट्रीय महासचिव विजयानंद मिश्रा जी से मुलाकात कर राजनीतिक और सामाजिक चर्चा किया। इस मौके पर रणजीत सिंह, प्रवीण सिंह, चन्द्रभान सिंह, पवन शुक्ला, मूरली सिंह चौहान , विकास पाण्डेय, मनोज शर्मा, अशोक पाठक, बबूंदर यादव सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे!

न्यायालयों में तारीख पे तारीख वाली संस्कृति हो खत्म', सीजीआई चंद्रचूड़ ने लंबित मामलों की बड़ी संख्या पर जताई चिंता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। न्यायालयों में लंबित मामलों की बड़ी संख्या पर चिंता जताते हुए सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा है कि मुकदमों की सुनवाई में तारीख पे तारीख वाली संस्कृति खत्म होनी चाहिए। न्यायालयों में लंबित मामलों की बड़ी संख्या पर सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने चिंता जताई है। गुजरात के कच्छ में जिला न्यायाधीशों के अखिल भारतीय सम्मेलन में मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि न्यायालयों में लंबित मामलों की संख्या इस समय न्यायपालिका के लिए बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि आम आदमी की सोच को बदलने की जिम्मेदारी हमारी है। मुख्य न्यायाधीश ने न्यायाधीशों से कहा, 'न्यायालयों में लंबित मामलों की संख्या कम होनी चाहिए और सामान्य स्थिति कायम होनी चाहिए। इसके लिए न्यायाधीशों को महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होगी।' मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि आम आदमी की सोच को बदलने की जिम्मेदारी हमारी है। हमें अपनी कार्यशैली में बदलाव करके लंबित मामलों को जल्द निपटाने की प्रवृत्ति विकसित करनी चाहिए। इससे न केवल आम आदमी का कल्याण होगा बल्कि न्यायपालिका के प्रति उसके विश्वास में बढ़ोतरी होगी। इससे न्यायपालिका की भूमिका भी प्रभावी और बेहतर होगी मुख्य न्यायाधीश ने कहा, निणन्य लेते समय हमें इंटरनेट मीडिया पर होने वाली टिप्पणियों और विभिनन् तरह की अपीलों के प्रभाव में नहीं आना है।

गाजा में गहराया मानवीय संकट, कुपोषण के कारण अब तक 15 बच्चों की मौत

कायरो। पश्चिम एशिया में बीते साढ़े चार महीने से अधिक समय से जारी हिंसक संघर्ष के कारण अब तक लगभग 30 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। इस युद्ध का सबसे अधिक असर महिलाओं और बच्चों पर दिख रहा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को जानकारी दी गई है कि गाजा में हालात के और भी ज्यादा खराब होने की पूरी आशंका है। गाजा की एक चौथाई आबादी भुखमरी के कगार पर पहुंच चुकी है और उत्तरी गाजा में दो साल से कम उम्र के हर छह में से एक बच्चा कुपोषण का शिकार हो रहा है। अब तक कुपोषण से 15 बच्चों की मौत हो गई है। इसी बीच, गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से बताया गया है कि वहां पर कुपोषण और पानी के कमी के कारण भी अब तक कई बच्चों की मौत हो चुकी है। गाजा में स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक बयान में कहा, ठगाजा के कमाल अदवान अस्पताल में पिछले कुछ दिनों में कुपोषण और निर्जलीकरण से कम से कम 15 बच्चों की मौत हो गई है।

संगम लाल गुप्ता को प्रत्याशी बनाये जाने पर जिले के नेताओं ने जताई खुशी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रतापगढ़।भाजपा द्वारा सांसद संगम लाल गुप्ता को पुनः लोकसभा प्रत्याशी बनाये जाने पर एक संयुक्त प्रेस वार्ता में विधायक राजेन्द्र मौर्या एवं जिलाध्यक्ष भाजपा आशीष श्रीवास्तव ने सांसद संगम लाल के साथ एक होटल में सम्बोधित करते हुये केन्द्रीय नेतृत्व को धन्यवाद दिया और कहा कि प्रथम चरण में अधिसूचना के पहले प्रतापगढ़ का टिकट घोषित करने से हम सभी कार्यकर्ताओं को चुनाव की रणनीतिक सफलता हेतु पर्याप्त समय मिल गया जिला अध्यक्ष ने कहा कि आने वाले समय में जनपद का कार्यकर्ता सांसद के कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार है। अभी हमारा धोषणा पत्र नहीं बना है पर मोदी जी की इच्छा है कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिये जन सहभागिता जरूरी है जिसके लिये कल से हमारे जनपद में विकसित भारत मोदी की गारंटी अभियान के तहत संकल्प पत्र संकलन एवं वीडियो वैन का संचालन होगा।इस अभियान के माध्यम से भाजपा द्वारा 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने हेतु नागरिको से सुझाव एकत्रित किये जायेगें।यह अभियान 30प्र0 में 3 मार्च से 15 मार्च तक चलेगा। इसमें हर विधान सभा में 1 पेटी और जिला मुख्यालय पर 1 पेटी रखी जायेगी जिसमें 500 सुझाव पत्रक रखे जायेगें और प्रतिदिन इसका संकलन कर प्रदेश के माध्यम से केन्द्र भेजा जायेगा और नमो ऐप पर अपलोड किया जायेगा। सांसद ने कहा कि सरकार की सर्वांगीण विकास की सोच का परिणाम है कि आज आजादी के 70 साल बाद प्रतापगढ़ जैसी जगह पर भी मेडिकल कॉलेज की स्थापना कराने में हम सफल हो सके। नगर के भुपियामऊ से गोंडे के बीच 11.3 किमी को सीसी रोड डिवाइडर सहित निर्माण कार्य की प्रकिया आरम्भ है जल्द ही नगर के मध्य की सड़क की तस्वीर बदलती दिखेगी,वहीं गोंडे से सुखपालनगर का बाई पास का तेजी के साथ निर्माण हो रहा है जिससे शहर का जाम समाप्त हो जाएगा और उसके साथ ही अधूरे बाई पास को बढ़ाकर आगे राजगढ़ तक मिलाने की भी स्वीकृति के साथ स्थल पर कार्य भी आरम्भ हो चुका है जो बहुत बड़े बदलाव का आधार बनेगा । उन्होंने बताया की इसी तरह लालगंज,सगरा सुन्दरपुर, रानीगंज अजगरा, मोहनगंज, पृथ्वीगंज,रानीगंज तहसील से होकर गुजरने वाले लखनऊ वाराणसी राजमार्ग पर जाम से मुक्ति दिलाने हेतु 51 किमी लम्बे बाई पास निर्माण की प्रक्रिया भी आरम्भ हो चुकी है जिसका भूमिपूजन भी बीते दिनों केंद्रीय मंत्री ने स्वयं कर दिया है।इसी प्रकार प्रतापगढ़ से अमेठी, गौरीगंज, मुसाफिरखाना को राष्ट्रीय राजमार्ग के रूप में विकसित करने की परियोजना पर भी कार्य आरम्भ किया जा चुका है,जिसमे नरहरपुर से अंतू तक 16 किमी का ग्रीन कॉरिडोर के रूप में बाई पास निर्माण की घोंषणा भी हो गई।साथ ही राष्ट्रीय राजमार्ग प्रयागराज के मकूनपुर चौराहे से बेलखरनाथ धाम,माँ बाराही देवी धाम होते हुए शनिदेव धाम से पुनःएनएच 330 पर विश्वनाथगंज बाजार में 40 किमी के लंबे रिंग रोड़ जे निर्माण की भी घोषणा कर दी गई है।मेडिकल कालेज के लिये भी सर्विसलेन तथा गोंड़े से संग्रामपुर के 2 किमी सर्विसलेन बनाने की भी घोंषणा मंत्री द्वारा की जा चुकी है । उन्होंने कहा कि चिलबिला जैसी जर्जर और गंदगी के अंबार की स्थिति वाले स्टेशन को आज हाईटेक कर महानगरों के स्टेशनो की भांति विकसित किया जा चुका है।साथ ही मां बेल्हा देवी धाम जंक्शन स्टेशन को एयरपोर्ट की तर्ज पर विकसित करने की आधारशिला स्वयं पीयम मोदीजी द्वारा करने के साथ कार्य भी आरम्भ हो चुका है।

यह एक अद्भुत अनुभव था अनील कपूर ने की अनंत अंबानी की तारीफ, वंतारा दौरे के लिए लिखा खास नोट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग सेलिब्रेशन के दूसरे दिन की थीम 'ए वॉक ऑन द वाइल्डसाइड' रखी गई और ड्रेस कोड 'जंगल फीवर' तय किया गया है। इस कार्यक्रम का हिस्सा कई बॉलीवुड सेलेब्स बने। अब अनिल कपूर ने सोशल मीडिया पर अनंत की तस्वीरें शेयर करते हुए एक खास नोट लिखते हुए अनंत अंबानी की तारीफ की है। साथ ही वंतारा दौरे का अनुभव भी शेयर किया है अनिल कपूर ने आज शनिवार को अपने सोशल मीडिया हैंडल इंस्टाग्राम पर दो तस्वीरें शेयर कीं।

कपूर ने अपने इंस्टाग्राम पर अनंत अंबानी के वंतारा में कदम रखने का अपना अनुभव शेयर किया।अनंत-राधिका के प्री वेडिंग के दूसरे दिन आज शनिवार को ए वॉक ऑन द वाइल्डसाइड थीम पर जामनगर पहुंचे लोगों ने वंतारा का दौरा किया। इसके बाद अब अनिल पहली तस्वीर में अनंत, राधिका मर्चेंट के साथ नजर आए। दूसरी तस्वीर में अनंत अपने माता-पिता मुकेश अंबानी और नीता अंबानी के साथ दिखे। इन फोटोज को शेयर करते हुए एक्टर ने एक खास नोट के साथ जानवरों और प्रोजेक्ट के प्रति अनंत की कमिटमेंट की तारीफ काअनिल कपूर ने लिखा, 'अनंत अंबानी के वंतारा में कदम रखना जानवरों के प्रति असीम प्रेम और जुनून का रहस्योद्घाटन था। दुनिया भर के चिड़ियाघरों का दौरा करने के बाद, मैंने कभी भी बड़े और छोटे प्राणियों के प्रति इतनी गहन देखभाल और सन्हे का अनुभव नहीं किया। हम सभी ने पशु कल्याण पर वृत्तचित्र देखे हैं, लेकिन वंतारा में प्रत्यक्ष रूप से भक्ति देखना एक परिवर्तनकारी अनुभव थाहाथियों जैसे सौम्य दिग्गजों से लेकर राजसी शेरों तक, प्रत्येक के प्रति अनंत की अटूट प्रतिबद्धता, अभयारण्य के हर कोने में स्पष्ट है। यह उनकी दूरदर्शिता और करुणा का प्रमाण है, जो हमारे ग्रह के बहुमूल्य वन्य जीवन के संरक्षण के लिए आशा जगाता है। यह एक अद्भुत अनुभव था, जिसे मैं हमेशा याद रखूंगा'।अनिल कपूर हाल ही में फाइटर में नजर आए थे। इस फिल्म में उनके साथ ऋतिक रोशन और दीपिका पादुकोण समेत कई कलाकार दिखाई दिए थे। फिल्म लोगों को काफी पसंद आई थी और इसने बॉक्स ऑफिस पर भी अच्छा बिजनेस किया था।

प्री-वेडिंग पार्टी में शाहरुख खान-सलमान और आमिर नहीं कर पाए 'नाटू नाटू' का हुक-स्टेप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। जब भी हिंदी सिनेमा के जिगरी यारों की बात आएगी, सलमान खान, शाह रुख खान और आमिर खान का नाम जरूर शुमार होगा। तीनों के बीच कभी पक्की दोस्ती रही तो कभी दुश्मनी, लेकिन अच्छे दोस्त बिछड़ने के बाद भी साथ आ जाते हैं। कुछ ऐसा ही सलमान, शाह रुख और आमिर के साथ भी है। के प्री-वेडिंग पार्टी में अनन्या पांडे से लेकर जाह्नवी कपूर और दीपिका पादुकोण-रणवीर सिंह तक ने डांस किया। ऐसे में तीनों खान यानी सल्लू मिया और पीछे कैसे रह सकते हैं। तीनों खान ने अनंत और राधिका के प्री-वेडिंग फंक्शन को यादगार बनाने के लिए स्टेज पर धमाल मचा दिया।आमिर खान, सलमान खान और शाह रुख खान की तिकड़ी को एक साथ देखने के लिए हर कोई बेसब्री से इंतजार करता है। फाइनली राधिका मर्चेंट और अनंत अंबानी के प्री-वेडिंग फंक्शन में तीनों खान ने एक स्टेज को शेयर किया और धमाल मचा दिया।अनंत और राधिका की पार्टी में आमिर, सलमान और शाह रुख ने एक साथ परफॉर्मेंस दिया और उनका डांस कोई ऐसा-वैसा नहीं

था, बल्कि सभी सेलिब्रिटीज से एकदम हटके था। एक स्टेज पर तीनों खान ने पहलेँ फिल्म के ऑस्कर विनिंग सॉन्ग नाटू नाटू गाने पर डांस करने की कोशिश की, जब बात नहीं बनी तो ऐसा मजेदार डांस किया कि हर कोई बस उन्हें ही देखता रह गया।सोशल मीडिया पर सलमान, शाह रुख और आमिर का एक मजेदार वीडियो सामने आ रहा है। क्लिप में देखा जा सकता है कि तीनों खान पहले नाटू नाटू का हुक स्टेप करने एक साथ आते हैं, महर सलमान और आमिर स्टेप सही से नहीं करते हैं और शाह रुख उन्हें टोकते हैं। सलमान खान फनी अंदाज में झनन जाते हैं और अपना टॉवल वाला सिगन्चेर स्टेप अपने जिगरी यारों के साथ करते हैं।

बिहार की मनीषा रानी बनीं झलक दिखला जा 11 की विनर, बोलीं- बॉलीवुड में जाना है सपना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मुंबई। जब इरादे मजबूत हों और लोगों का प्यार मिले, तो सामने कितने ही बड़े दिग्गज क्यों न हों, अपनी मंजिल पाने से कोई नहीं रोक सकता है। मुंगेर (बिहार) की मनीषा रानी ने टीवी जगत के स्थापित नामों के बीच शनिवार रात डांस रियलिटी शो झलक दिखला जा 11 जीतकर उक्त कथन को सिद्ध कर दिया।डांस रियलिटी शो झलक दिखला जा का 11वां सीजन अब खत्म हो गया है। इस शो को इसका विनर मिल गया है। बिहार की मनीषा रानी ने शोएब इब्राहिम और अद्रिजा सिन्हा को हराकर ये ट्रॉफी अपने नाम कर ली है। इसके साथ ही उन्होंने इंटरव्यू में अपने आगे के सपने के बारे में भी बात की है और बताया है कि अब वो बॉलीवुड में जाना चाहती हैं।शो के बीच में मनीषा की एंट्री वाइल्ड कार्ड के माध्यम से हुई थी। फाइनल में उनके साथ धनश्री वर्मा, शोएब इब्राहिम, अद्रिजा सिन्हा और श्रीराम चंद्रा पहुंचे थे, जिसमें जनता से मिले वोटों के आधार पर मनीषा, शोएब और अद्रिजा ने टॉप 3 में अपनी जगह बनाई।विनर घोषित होने के

THE GREAT
GRAND FINALE
THE GREAT
GRAND

बाद मनीषा को पुरस्कार स्वरूप विजेता ट्रॉफी के साथ 30 लाख रुपये तथा उनके कोरियोग्राफर आशुतोष पवार को 10 लाख रुपये मिले। इसके साथ ही दोनों को दुबई के पास आइलैंड का ट्रिप भी मिला। इंटरनेट मीडिया पर अपने लघु वीडियो से चर्चित हुई मनीषा को पिछले साल रियलिटी शो बिग बॉस ओटीटी सीजन- 2 से खूब लोकप्रियता मिली। इसमें वह तीसरे स्थान पर रही थीं।झलक दिखला जा की विजेता बनने के बाद दैनिक जागरण से बातचीत में मनीषा ने कहा, 'जब मैंने एंट्री ली थी, तो बस सीखने और अपनी छाप छोड़ने का इरादा था। जब जजेस से थोड़ी तारीफ सुनने को मिली तो धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ने लगा कि अब जीत भी सकती हूं। मेरी जीत का श्रेय मेरे कोरियोग्राफर, मेरी मेहनत और मेरे प्रशंसकों को जाता है।

काजोल ने बहन तनीषा को बेहद प्यारे अंदाज में किया बर्थडे विश, लिखा ये खास मैसेज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मुंबई। बॉलीवुड एक्ट्रेस काजोल की बहन तनीषा मुखर्जी आज 3 मार्च को अपना 46 वां जन्मदिन मना रही हैं। इस खास मौके पर उनके फैंस और परिवार के लोग उन्हें जन्मदिन की बधाई दे रहे हैं। ऐसे में बड़ी बहन काजोल ने भी सोशल मीडिया पर तनीषा के साथ एक खास तस्वीर शेयर करते हुए उन्हें बर्थडे विश किया है। 46 साल की हो गई हैं। ऐसे में उनकी बड़ी बहन और एक्ट्रेस काजोल ने खास अंदाज में अपनी छोटी बहन को जन्मदिन की बधाई दी है। इस पोस्ट में एक्ट्रेस ने तनीषा के साथ एक खास तस्वीर शेयर की है और प्यार भरा मैसेज लिखा है। एक्ट्रेस के साथ-साथ तनीषा मुखर्जी के फैंस भी उन्हें जन्मदिन की बधाई दे रहे हैं। काजोल ने

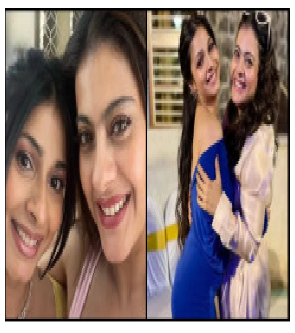

अपने सोशल मीडिया हैंडल इंस्टाग्राम पर तनीषा मुखर्जी के साथ एक तस्वीर शेयर की। इस फोटो में एक्ट्रेस मुस्कुराते हुए कैमरा के सामने पोज देते हुए नजर आ रही हैं। फोटो को शेयर करते हुए एक्ट्रेस ने कैप्शन में लिखा, 'मेरी यंग सिस्टर को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं, आपका जीवन सदैव प्रकाश, प्रेम और हंसी से भरा रहे। तुम्हें बेहद प्यार करती हूं'। काजोल के इस पोस्ट पर तनीषा मुखर्जी ने भी अपना रिएक्शन दिया है। तनीषा ने कमेंट सेक्शन में कमेंट करते हुए लिखा, 'लव यू माय बेबी, फॉरएवर एंड एवर'। इसके अलावा तनीषा के कई फैंस ने भी उन्हें जन्मदिन की बधाई दी है। एक यूजर ने लिखा, 'हैप्पी बर्थडे तनीषा मैम'। एक अन्य यूजर ने लिखा, 'जन्मदिन मुबारक हो तनीषा...अपना आकर्षण फैलाती रहो'।

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेट के प्री वेडिंग में क्यों शामिल नहीं हुई प्रियंका चोपडा मां मधु चोपड़ा ने दिया ये जवाब

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट का प्री-वेडिंग सेलिब्रेशन गुजरात के जामनगर में हो रहा है। इस सेलिब्रेशन में हिस्सा लेने के लिए देश-विदेश से कई मशहूर हस्तियां वहां पहुंचीं। शाह रुख खान, सलमान खान, अभिषेक बच्चन समेत कई बॉलीवुड सेलेब्स इस ग्रैंड इवेंट का हिस्सा बने, लेकिन प्रियंका चोपड़ा और निक जोनस नहीं आए।इस कि वह कई सालों से जामनगर आना चाहती थीं और अनंत और राधिका की प्री-वेडिंग पार्टी की बदौलत आखिरकार यह सच हो गया है। जब मधु चोपड़ा से पूछा गया कि प्रियंका वहां मौजूद नहीं हैं, तो मधु ने सहमति जताई, लेकिन उनके न आने का कारण नहीं बताया। उन्होंने बस इतना कहा, 'वह इसकी भरपाई कर लेगी, चिंता मत करो'।बता दें कि प्रियंका चोपड़ा अंबानी फैमिली के

समय हर तरफ के प्री वेडिंग जशन की धूम देखने को मिल रही है। सेलेब्स से लेकर बिजनेस खेल जगत की कई मशहूर हस्तियां इस रंग में रंगी हुई नजर आ रही है। हालांकि प्रियंका चोपड़ा इस सेलिब्रेशन का हिस्सा नहीं बनी। अब उनकी मां मधु चोपड़ा ने इस पर खुलकर बात की है और एक्ट्रेस के न आने पर ये जवाब दिया है।अब प्रियंका चोपड़ा की मां मधु चोपड़ा ने इस बारे में खुलासा किया है और बताया है कि क्यों आखिर एक्ट्रेस शामिल नहीं हुईं।मधु चोपड़ा ने इंस्टेंट बॉलीवुड से जामनगर में बात की और कहा कई बड़े इवेंट्स में अक्सर नजर आती रही हैं। बीते साल मार्च 2023 में भी प्रियंका और निक जोनस ने मुंबई का इवेंट अटेंड किया था।अनंत-राधिका के प्री वेडिंग में शाह रुख खान, सलमान खान, अजय देवगन, शाहिद कपूर, मीरा राजपूत, करीना कपूर, सैफ अली खान, आमिर खान, अक्षय कुमार, अनिल कपूर, सुनील शेट्टी, सोनम कपूर, सारा अली खान, श्रद्धा कपूर, राम चरण, उपासना, टाइगर श्रॉफ समेत कई स्टार्स शामिल हुए हैं प्रियंका के वर्क फ्रंट की बात करें, तो एक्ट्रेस जल्द 'द ब्लफ' में नजर आने वाली हैं।

एक दूजे के हुए सुरभि और करण, डांस करते हुए दुल्हनिया ने ली एंट्री

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। छोटे पर्दे की जानी-मानी एक्ट्रेस सुरभि चंदना अब मिस से मिसेज बन गई हैं। सुरभि ने जयपुर के पास स्थित चोमू जिला के चोमू हैं।अब उनके ब्राइडल एंट्री से लेकर फेरों तक के कई फोटोज और वीडियो सामने आ गए हैं। ये फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर अब काफी तेजी से वायरल हो रहे

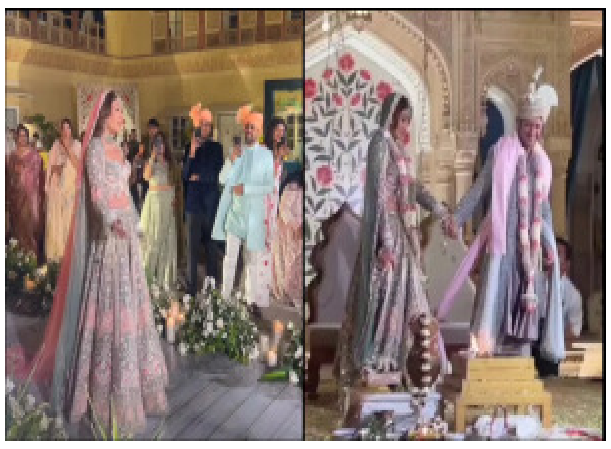

पैलेस होटल में करण शर्मा के साथ सात फेरे लिए हैं।टीवी एक्ट्रेस मार्च को करण शर्मा के साथ शादी के बंधन में बंध गई हैं। बीते दिनों एक्ट्रेस के हल्दी-मेहंदी की फोटोज और वीडियो सोशल मीडिया पर लगातार वायरल हो रहे थे। अब उनकी शादी के फोटो और वीडियो भी सामने आ गए हैं। सुरभि ने डांस करते हुए ब्राइडल एंट्री ली है जिसमें वो बेहद प्यारी लग रही हैं।सुरभि ने अपने ब्राइडल लुक को काफी यूनिक रखा। एक्ट्रेस ने रेड या पिंक नहीं, बल्कि ग्रे और पेस्टल कलर का कॉन्ट्रास वाला लहंगा पहना। उनके लहंगे पर काफी हैवी वर्क किया गया था। इसके साथ ही एक्ट्रेस ने नेकलेस और मांग टीके के साथ बालों को खुला रखते हुए अपने ब्राइडल लुक को कंप्लीट किया। वहीं, दूल्हे करण ने भी ग्रे कलर की शेरवानी और गोल्डन पगड़ी पहनी।

'राम चरण कहां है तू स्टेज पर जब शाह रुख खान ने एक्टर को लगाई आवाज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मुंबई। मुकेश अंबानी और नीता अंबानी के छोटे बेटे अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग

फंक्शन की धूम देखने को मिल रही है। 1 मार्च से शुरू हुआ ये फंक्शन 3 मार्च रविवार तक चलेगा। बीते इन दो दिनों में अंबानी परिवार के इस फंक्शन में काफी कुछ देखने को मिला। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग फंक्शन की धूम देखने को मिल रही है। 1 मार्च से शुरू हुआ ये फंक्शन 3 मार्च रविवार तक चलेगा। बीते इन दो दिनों में अंबानी परिवार के इस फंक्शन में काफी कुछ देखने को मिला। इस बीच शाह रुख खान और राम चरण का एक वीडियो वायरल हो रहा है। पहले दिन जहां हॉलीवुड सिंगर रिहाना ने अपने एक से बढ़कर गाने गाए, जिसमें डायमंड्स, व्हेयर हैव यू बीन, रूड बॉय शामिल थे। तो वहीं दूसरे दिन फिल्मी सितारों ने स्टेज पर अनंत और राधिका के लिए डांस परफॉर्मेंस दी। अंनत और राधिका की इस खुशी में बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड और साउथ इंडस्ट्री के बड़े स्टार्स भी शामिल हो हुए है। इस सेलिब्रेशन के फोटो-वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। इसी बीच एक और वीडियो वायरल हो रहा है, जिनमें तीनों खान यानी सलमान खान, शाह रुख खान और आमिर खान स्टेज पर नीता अंबानी के साथ नजर आ रहे हैं। बैकग्राउंड में'' के गाने 'नाटू-नाटू' गाना बज रहा है। ऐसे में शाह रुख को गाने के हीरो राम चरण की याद आती है और वह माइक पर जोर से राम चरण को आवाज लगाते हैं।शाह रुख खान माइक पर बोलते सुनाई दे रहे हैं 'राम चरण कहां है तू'।

रश्मिका मंदाना ने दिया फिल्म पुष्पा 2 को लेकर बड़ा अपडेट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। रश्मिका मंदाना इन दिनों काफी चर्चा में हैं। रणबीर कपूर के साथ 'एनिमल' में नजर आने के बाद अब एक्ट्रेस 'पुष्पा 2: द रूल' की तैयारी कर रही हैं। इसके पहले पार्ट 'पुष्पाः द राइज' को लोगों ने काफी पसंद किया था।रश्मिका मंदाना और अल्लू अर्जुन स्टारर फिल्म पुष्पा 2 काफी समय से सुर्खियों में बनी हुई है। फैंस भी इस मूवी का लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं। अब हाल ही में एक इंटरव्यू में एक्ट्रेस ने इस फिल्म से जुड़ा बड़ा अपडेट शेयर किया है। साथ ही अपने किरदार पर भी बात की है। चलिए जानते हैं रश्मिका ने इस फिल्म को लेकर क्या कहा है।अब हाल ही में एक इंटरव्यू में एक्ट्रेस ने 'पुष्पा 2' को लेकर बड़ा अपडेट शेयर किया है। इसके साथ ही तीन साल के लंबे समय के बाद कलाकारों और क्रू के साथ फिर से जुड़ने का अनुभव भी बताया है।पुष्पा 2: द रूल' में अपने किरदार श्रीवल्ली की भूमिका के बारे में बात करते हुए रश्मिका ने खुलासा किया कि वह अब पुष्पा की पतनी हैं और यह बहुत सारी जिम्मेदारियों के साथ आती है। सीक्वल में बहुत ज्यादा ड्रामा और संघर्ष होगा और फिल्म में 'बहुत अधिक मसाला' भी होने वाला है'।इसके साथ ही इंटरव्यू में एक्ट्रेस ने बताया कि सीक्वल में अल्लू अर्जुन, सुकुमार और बाकी टीम के साथ फिर से जुड़ने पर उन्हें कैसा लगा। रश्मिका ने कहा, 'यह घर जैसा महसूस होने लगता है। जैसे, जब आप एक फिल्म पूरी

करते हैं और फिल्म के अंत तक आप वास्तव में कलाकारों और क्रू के साथ जुड़ जाते हैं। इसलिए जब आपका पार्ट 2 आता है, तो आप फिर से कहते हैं 'अरे, क्या हो रहा है और आप बस, एक तरह से पसंद करते हैं- यह पार्टी का समय है'।फिलहाल, पुष्पा 2 की शूटिंग चल रही है। नवंबर 2023 में अल्लू अर्जुन के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों की वजह से शूटिंग रोक दी गई थी, लेकिन बाद में इसे फिर से शुरू कर दिया गया। पिछले साल अल्लू अर्जुन ने पुष्पा 2 से अपना फर्स्ट-लुक पोस्टर शेयर किया था, जिसमें वह साड़ी पहने हुए दिखाई दिए थे और उनका चेहरा नीले और लाल रंग से रंगा हुआ था।

प्रेग्नेंट दीपीका राधिका-अनंत की प्री-वेडिंग में किया धमाकेदार डांस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली।बी-टाउन की टॉप एक्ट्रेसेज की लिस्ट में शुमार दीपिका पादुकोण जल्द ही मां बनने वाली

हैं। अभिनेत्री ने अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग पार्टी में शामिल होने से पहले अपनी प्रेगनेंसी का एलान किया था। प्री वेडिंग फंक्शन का कल दूसरा दिन था। इस खास मौके पर बॉलीवुड सितारों ने अपनी डांस परफॉर्मेंस से महफिल में चार-चांद लगा दिया। यहां तक कि आज भी प्रेगनेंसी में पति के साथ थिरकने से खुद को रोक नहीं पायीं। अभिनेत्री ने रणवीर सिंह के साथ डांस फ्लोर पर हुक स्टेप से आग लगा दी।दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह शादी के 6 साल बाद माता-पिता बनने के लिए तैयार हैं। अवॉर्ड्स के दौरान दीपिका की प्रेग्नेंसी के कयास लगने शुरू हो गए थे। इसके तुरंत बाद अभिनेत्री और उनके पति रणवीर ने सोशल मीडिया पर घोषणा कर दी थी कि वे माता-पिता बनने जा रहे हैं।मॉम टू बी' दीपिका पादुकोण इन दिनों अपने पति रणवीर सिंह के साथ राधिका मर्चेंट और अनंत अंबानी के प्री-वेडिंग फंक्शन के लिए जामनगर में हैं। पहले दिन अभिनेत्री ने रिहाना का कॉन्सर्ट एन्जॉय किया था और ब्लैक ड्रेस में कहर बरपाया था। दूसरे दिन भी दीपिका ने अपना चार्म बिखेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी।दीपिका पादुकोण ने रणवीर सिंह के साथ स्टेज पर पति की फिल्म दिल धड़कने दो के गल्लां गूडियां गाने पर शानदार डांस परफॉर्मेंस किया। दीपिका ने अपने पति रणवीर के साथ डांस फ्लोर पर आग लगा दी। उन्होंने गाने का एक-एक सिगन्चेर स्टेप्स फॉलो किया और दमदार अंदाज में परफॉर्म किया। सोशल मीडिया पर होने वाले माता-पिता का वीडियो वायरल हो रहा है।होने वाले मम्मी-पापा दीपिका और रणवीर ने राधिका और अनंत की प्री-वेडिंग पार्टी में रॉयल लुक से सभी का ध्यान खींच लिया। दीपिका ने ग्रैंड पार्टी के लिए ब्लैक बॉर्डर वाला गोल्डन एम्बेलिश्ड लहंगा पहना था, जिसे अभिनेत्री ने सिंपल गोल्डन फुल स्लीव्स चोली और दुपट्टे के साथ स्टाइल किया। हैवी चोकर और झुमकों ने उनके लुक को रॉयल बनाया।स्मोकी आईज, न्यूड लिप्स और मिनिमल मेकअप के साथ स्लीक हेयर बन में दीपिका गजब ढहा रही थीं। बात करें रणवीर सिंह की तो वह ब्लैक आउटफिट में नजर आए। अभिनेता के जैकेट स्टाइल कुर्ता में ब्लू प्रिंट था। ब्राउन चश्मे में वह डैपर लग रहे थे।

सिनी शेट्टी कर रही हैं मिस वर्ल्ड 2024 में भारत का प्रतिनिधित्व

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मुंबई।भारत में अतिथि देवो भवः की परंपरा है। मेरा सपना था कि मैं भारत का प्रतिनिधित्व करूं, यहां तो पूरी दुनिया ही भारत आ चुकी है। हम इस बार इसकी मेजबानी कर रहे हैं तो बहुत अच्छा लग रहा है। यह कहना है 71वें मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहीं सिनी शेट्टी का। मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता का फाइनल 9 मार्च को मुंबई में आयोजित होगा। इसमें भाग लेने के लिए 117 देशों की प्रतिभागी भारत आ चुकी हैं। प्रतियोगिता का आगाज गत फरवरी से नई दिल्ली से हो चुका है।71वें मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता का आयोजन इस बार भारत में हो रहा है। लगभग 28 साल बाद इस प्रतियोगिता की मेजबानी भारत कर रहा है। इसमें भाग लेने के लिए 117 देशों की प्रतिभागी भारत आ चुकी हैं। इस बार मिस व?र्ल्ड प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व सिनी शेट्टी कर रही हैं। उन्होंने इंटरव्यू में कहा है कि मैं प्रियंका की तरह अपनी राय को खुलकर व्यक्त करती हूं।मैं सौभाग्यशाली हूं कि उन्हें इसके बारे में बता पा रही हूं। मैं उन्हें हमारी अनेकता में एकता की संस्कृति के बारे में बताती हूं। यहां पर 117 देशों की प्रतिभागी एक परिवार की तरह रह रही हैं। यही

काम हम सदियों से करते आ रहे हैं। मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में रीता फारिया, ऐश्वर्या राय, डायना हेडन, युक्ता मुखी, प्रियंका चोपड़ा, मानुषी छिल्लर भारत का नाम रौशन कर चुकी हैं। इनसे मार्गदर्शन लेने को लेकर सिनी का कहना है कि अभी तक किसी से बात नहीं कर पाई हूं, लेकिन उनके सफर से परिचित हूं।वह सिर्फ मेरे लिए नहीं, दुनियाभर के लोगों के लिए प्रेरणा की स्त्रोत रही हैं। हर किसी ने अपने पीछे खूबसूरत विरासत छोड़ी हैं। मैं इस प्रतियोगिता का हिस्सा बनकर सम्मानित महसूस कर रही हूं। हालांकि, वह खुद को प्रियंका चोपड़ा के समान पाती हैं। सिनी कहती हैं कि मैं प्रियंका की तरह अपनी राय को खुलकर व्यक्त करती हूं।

इस वजह से परफॉर्म के तुरंत बाद अमेरिका के लिए रवाना हुई थीं रिहाना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मुंबई। देश से लेकर विदेशों तक इन दिनों अंबानी परिवार के छोटे बेटे अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग सेलिब्रेशन की चर्चा हो रही है, जो पिछले तीन से गुजरात के जामनगर में हो रहा है। जहां बॉलीवुड से लेकर क्रिकेटर्स, राजनेता और कई विदेशी मेहमान भी शामिल

हो रहे हैं।अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग सेलिब्रेशन के पहले दिन हॉलीवुड सिंगर रिहाना ने अपना जलवा बिखेरा था । सोशल मीडिया पर सेलिब्रेशन की लगातार फोटोज और वीडियो वायरल हो रहे हैं । प्री-वेडिंग फंक्शन 1 मार्च से शुरू हुए थे जो 3 मार्च तक चलने वाले हैं । सोशल मीडिया पर सेलिब्रेशन की लगातार फोटोज और वीडियो वायरल हो रहे हैं। प्री-वेडिंग फंक्शन 1 मार्च से शुरू हुए थे जो 3 मार्च तक चलने वाले हैं। ऐसे में पहले दिन हॉलीवुड सिंगर रिहाना ने शानदार परफॉर्मेंस दी थी, लेकिन सिंगर अपनी परफॉर्मेंस के तुरंत बाद ही वापस अमेरिका के लिए रवाना हो गई, जिससे लोगों के मन कई तरह के सवाल-जवाब खड़े हुए। वहीं अब सिंगर के जाने की वजह सामने आई है। रिहाना 29 फरवरी की शाम जामनगर पहुंची थी।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स
एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज
उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं
आधुनिक समाचार
पब्लिसिंग हाउस सी 41
यूपीएसआईडीसी नैनी प्रयागराज
211010 (उ.प्र.)
से प्रकाशित
सम्पादक/प्रकाशक
डा. पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।